www.divybharath.com
राष्ट्रीय समाचार पत्र
RNI NO. DELHIN/2009/28518

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
दिव्य भारत

वर्षः 17 | अंकः 171 | नई दिल्ली , सोमवार , 07 जुलाई , 2025 | पृष्ठः संख्या 8 | मूल्यः 1.00 रूपये

■ भारत की एकता और ■ अखंडता के लिए.... पृष्ठ 7
■ निर्वासन में भी ज्योतिः ■ दलाई लामा का .. पृष्ठ 4
■ मंत्री सिरसा ने डीयू में ■ सिखों के बलिदान ... पृष्ठ 2
■ डॉ.श्यामा प्रसाद ■ मुखर्जी भारत के .. पृष्ठ 5

► मस्क ने फूंका चुनावी बिगुल, अब खुद उतरेंगे राजनीति में

अमेरिकी राजनीति में अब एलन मस्क की एंट्री, बनाई नई 'अमेरिका पार्टी'

मस्क बोले- दो पार्टियों से थक गया है देश, रिपब्लिकन और डेमोक्रेट दोनों हैं भ्रष्ट

● वॉशिंगटन डीसी / (एजेंसी)

अरबपति बिजनेसमैन एलन मस्क ने अमेरिका में एक नई राजनीतिक पार्टी बनाने का ऐलान किया है। उन्होंने इसका नाम अमेरिका पार्टी रखा है। मस्क ने एक्स पर इस बारे में जानकारी दी। मस्क ने लिखा, आज अमेरिका पार्टी का गठन किया जा रहा है, ताकि आपको आपकी आजादी वापस मिल सके।

उन्होंने एक्स पर एक पब्लिक पोल भी किया था, जिसमें 66 प्रतिशत लोगों ने नई पार्टी की स्थापना का समर्थन किया। मस्क ने यह भी कहा कि रिपब्लिकन और डेमोक्रेट दोनों ही भ्रष्ट हैं, और अब देश को दो पार्टी सिस्टम से आजादी मिलेगी। इससे पहले, 4 जुलाई को मस्क ने एक्स पर एक पोल डाला था, जिसमें पूछा था कि क्या आप दो पार्टी वाले सिस्टम से आजादी चाहते हैं और क्या अमेरिका पार्टी बनानी चाहिए?

अमेरिका का टू पार्टी सिस्टम

अमेरिका में पिछले डेढ़ सौ सालों से डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी का दबदबा रहा है। इन दोनों दलों का वर्चस्व राष्ट्रपति चुनाव से लेकर राज्यों की विधानसभाओं तक है। इस दो-पार्टी सिस्टम को अमेरिकी लोकतंत्र की स्थिरता का कारण माना जाता है। डेमोक्रेटिक पार्टी की शुरुआत 1828 में एंड्रू जैक्सन के दौर में हुई थी, जबकि रिपब्लिकन पार्टी 1854 में गुलामी के खिलाफ बनी थी।

मस्क-ट्रम्प के रिश्ते विवाद और समर्थन

एलन मस्क और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच कुछ समय पहले तक अच्छे रिश्ते थे, लेकिन 5 जून को मस्क और ट्रम्प के बीच बिग ब्यूटीफुल बिल को लेकर तीखी नोकझोंक हुई थी। इसके बाद मस्क ने ट्रम्प सरकार से खुद को अलग कर लिया था। मस्क का कहना था कि यह बिल अमेरिका में लाखों नौकरियां खत्म कर देगा। हालांकि, 4 जुलाई को ट्रम्प ने इस बिल पर हस्ताक्षर कर दिया और वह कानून बन गया। मस्क ने ट्रम्प को एहसान फरामोश बताते हुए सोशल मीडिया पर कई ट्वीट किए थे।

तीसरी पार्टी की असफलता का कारण

अमेरिका में कई बार तीसरी पार्टियां बनाई गईं, लेकिन वे सफल नहीं हो सकीं। 1912 में राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने बुल मूस पार्टी बनाई, जिसने 88 इलेक्टोरल वोट हासिल किए, लेकिन यह अगले चुनाव तक नहीं टिक सकी। इसके अलावा, 1992 में रॉस पेरोट ने 19 प्रतिशत पॉपुलर वोट लिए थे, लेकिन एक भी इलेक्टोरल वोट नहीं मिला। अमेरिका का चुनावी सिस्टम तीसरी पार्टी को सफल होने का मौका नहीं देता। यह सिस्टम केवल दो पार्टियों के वर्चस्व को बनाए रखने में मदद करता है।

मस्क का सरकारी खर्च में कटौती पर विवाद

मस्क को जब सरकारी खर्चों में कटौती के लिए जिम्मेदारी मिली, तो उन्होंने बड़े पैमाने पर कर्मचारियों की छंटनी की, जिसके बाद विरोध प्रदर्शन हुए। मस्क और विदेश मंत्री मार्क रुबियो के बीच 8 मार्च को कैबिनेट मीटिंग में बहस भी हुई, लेकिन ट्रम्प ने रुबियो का बचाव किया। यह पहला अवसर था जब ट्रम्प ने मस्क का समर्थन नहीं किया।

मस्क ने ट्रम्प के चुनावी प्रचार में खर्च किए थे 2500 करोड़

एलन मस्क ने ट्रम्प के राष्ट्रपति चुनाव प्रचार में करीब 2500 करोड़ रुपए खर्च किए थे। ट्रम्प के चुनाव जीतने के बाद मस्क का कद राजनीति में काफी बढ़ गया था। हालांकि, कुछ समय बाद मस्क और ट्रम्प के बीच मतभेद बढ़ने लगे।

बिग ब्यूटीफुल बिल पर मस्क का विरोध

सबसे बड़ा विवाद तब हुआ जब मस्क ने ट्रम्प सरकार के बिग ब्यूटीफुल बिल का विरोध किया। मस्क ने कहा कि यह बिल सरकार के घाटे को बढ़ाएगा और यह एक अपराध है। इसके बाद मस्क ने एक्स पर लिखा, यह बिल गैर जरूरी खर्चों से भरा हुआ है। जिन्होंने इसके लिए वोट किया, उन्हें शर्मिंदगी महसूस करनी चाहिए।

ग्लोबल साउथ के साथ दोहरा व्यवहार, होनी चाहिए वैश्विक निर्णयों में भूमिकाः प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को विकासशील देशों के लिए समान प्रतिनिधित्व, संस्थागत सुधार और निर्णय प्रक्रिया में समावेशिता की पुरजोर वकालत की। उन्होंने कहा कि बिना ग्लोबल साउथ की भागीदारी के वैश्विक संस्थाएं प्रभावी नहीं हो सकतीं। प्रधानमंत्री ने आज ब्राजील में आयोजित 17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के 'वैश्विक शासन' सत्र के दौरान अपने संबोधन में उक्त बातें कहीं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ग्लोबल साउथ अक्सर दोहरे मापदंडों का शिकार रहा है। संसाधनों का वितरण, जलवायु वित्त, स्थायी विकास और तकनीकी पहुंच जैसे विषयों में विकासशील देशों को केवल प्रतीकात्मक सहयोग ही मिला है। वैश्विक संस्थानों में बदलाव को जरूरी बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में, जहां तकनीक हर सप्ताह बदल रही है, वहां वैश्विक संस्थाओं का 80 वर्षों में भी न बदलना अस्वीकार्य है। उन्होंने कहा कि इक्कीसवीं सदी के सॉफ़्टवेयर को बीसवीं सदी के टाइपराइटर से नहीं चलाया जा सकता। उन्होंने कहा कि बीसवीं सदी में बने वैश्विक संस्थानों में मानवता के दो-तिहाई हिस्से को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिला है। जिन देशों का वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था में अहम योगदान है, उन्हें निर्णय प्रक्रिया से वंचित रखा गया है। यह केवल प्रतिनिधित्व का नहीं, बल्कि संस्थानों की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता का भी प्रश्न है। गंभीर सुधारों की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कहा कि आज दुनिया को बहुध्रुवीय और समावेशी वैश्विक व्यवस्था की आवश्यकता है। इसके लिए वैश्विक संस्थाओं में गंभीर और प्रभावी सुधार जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि केवल प्रतीकात्मक सुधार पर्याप्त नहीं होंगे। सरंचनात्मक बदलाव, वोटिंग अधिकारों और नेतृत्व पदों में भी परिवर्तन जरूरी है। प्रधानमंत्री ने ब्रिक्स को परिवर्तनशीलता का उदाहरण बताया और जोर देकर कहा कि अब यही इच्छाशक्ति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, विश्व व्यापार संगठन और बहुपक्षीय विकास बैंकों में भी दिखाई जानी चाहिए।

चुनाव आयोग के एसआईआर नीति को महुआ मोइत्रा ने सुप्रीम कोर्ट में दी चुनौती

कोलकाता, (हि. स.)। पश्चिम बंगाल के कृष्णानगर से तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की लोकसभा सांसद महुआ मोइत्रा ने चुनाव आयोग द्वारा बिहार में मतदाता सूची में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। उन्होंने इसे असंवैधानिक करार देते हुए न केवल इस आदेश को तत्काल प्रभाव से रद्द करने की मांग की, बल्कि यह भी आग्रह किया कि बंगाल समेत देश के अन्य किसी राज्य में इस तरह की नीति लागू न की जाए।

टीएमसी सांसद का तर्क है कि जो नागरिक पहले से मतदाता सूची में पंजीकृत हैं और वर्षों से मतदान करते आ रहे हैं, उनसे एक बार फिर नागरिकता साबित करने के लिए दस्तावेज मांगना सरासर गलत है। यह न केवल उनके लोकतांत्रिक अधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि संविधान की मूल भावना के भी खिलाफ है।

संक्षिप्त समाचार

ट्रक-ऑटोरिक्शा भिड़ंत में तीन लोगों की मौत

पाटन, (एजेंस)। गुजरात के पाटन जिले के राधापुर स्टट हाईवे पर रविवार को ट्रक और ऑटोरिक्शा की जबरदस्त टक्कर हो गई। हादसे में एक महिला, उसका 12 साल का बेटा और एक अन्य व्यक्ति की मौत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि ऑटोरिक्शा पूरी तरह चकनाचूर हो गया।

पटाखा फैक्ट्री में धमाका, 1 की मौत

विरुधुनगर, (एजेंसी)। विरुधुनगर जिले के सत्तूर स्थित हिदुस्तान फायरवर्क्स फैक्ट्री में रविवार दोपहर जोरदार धमाका हुआ। हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि चार घायल हैं। धमाके की तीव्रता इतनी थी कि फैक्ट्री के 10 से अधिक कमरे तबाह हो गए। राहत कार्य जारी है। शुरुआती जांच के मुताबिक, विस्फोट फैक्ट्री के भीतर काम के दौरान हुआ। यह वही इलाका है, जहां हाल ही में एक अन्य धमाके में 8 लोगों की मौत हुई थी।

अंडमान सागर में भूकंप के झटके, तीव्रता 4.5

नई दिल्ली, (एजेंसी) । रविवार सुबह अंडमान सागर म भूकंप के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार, सुबह 7.03 बजे आए इस भूकंप की तीव्रता 4.5 मापी गई। इसका केंद्र समुद्र तल से 10 किलोमीटर नीचे था। अभी तक किसी नुकसान की सूचना नहीं है।

मध्य प्रदेश में बरगी बांध के 9 गेट खुले

जबलपुर, (हि.स.)। रानी अवंति बाई लोधी सागर परियोजना बरगी बांध के जलस्तर को नियंत्रित करने के लिए इस सीजन में पहली बार रविवार दोपहर करीब 12 बजे इसके 21 में से 9 स्पिल-वे गेट औसतन 1.33 मीटर की ऊंचाई तक खोल दिये गये हैं और इनसे 52,195 क्यूसेक (घनफुट पानी प्रति सेकंड) पानी छोड़ा जा रहा है। कार्यपालन यंत्री बरगी बांध राजेश सिंह गौंड के अनुसार खोले गये 9 गेट में से गेट नम्बर 10, 11 और 12 को दो-दो मीटर, गेट नम्बर 9 और 13 को डेढ़-डेढ़ मीटर, गेट नम्बर 8 और 14 को एक-एक मीटर तथा गेट नम्बर 7 और 15 को आधा-आधा मीटर की ऊंचाई तक खोला गया है।

हिन्दुओं को जो बांटेगा वो खुद कट जाएगा : रामभद्राचार्य

■ कुछ लोग तिरंगा पर चांद चाहते हैं लेकिन हम तिरंगा को चांद पर लहराता देखना चाहते हैं : धीरेन्द्र शास्त्री

पटना, (हि.स.)। राजधानी पटना में रविवार को सनातन महाकुंभ का आयोजन किया गया। इस मौके पर रामभद्राचार्य ने कहा कि हिन्दुओं को जो बांटेगा वो खुद कट जाएगा। इस सनातन महाकुंभ में देश भर के संत शामिल हो रहे हैं।

जगदगुरु स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि पटना के गांधी मैदान में मुझे और धीरेंद्र शास्त्री को आने से रोका गया। उन्होंने कहा कि सत्ता अब हिंदू विरोधी के हाथ में कभी नहीं जाएगी। हिंदू को जो बांटना चाहेगा वो खुद ही कट जाएगा।

इस सनातन महाकुंभ में बागेश्वर पीठाधीश्वर बाबा धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने कहा कि हम यहां राजनीति के लिए नहीं बल्कि राम नीति के लिए आए हैं। उन्होंने कहा कि भारत अगर हिंदू राष्ट्र होगा तो बिहार से इसकी शुरूआत होगी और वह पहला राज्य बनेगा। उन्होंने यह भी कहा कि वह किसी धर्म के विरोधी नहीं हैं। वो बिहार में विधानसभा चुनाव के बाद पूरे प्रदेश का दौरा करेंगे। साथ ही 7 नवम्बर से 16 नवम्बर तक दिल्ली से वृंदावन की यात्रा करेंगे।

पटना में आयोजित महाकुंभ में धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि बिहार से ही भारत के हिंदू राष्ट्र बनने की शुरूआत होगी। अगर हमारे धर्म पर घात हुआ तो हम प्रतिघात करेंगे, भगवा गजवा-ए-हिंद की शुरूआत बिहार से होगी। उन्होंने कहा कि कुछ लोग तिरंगा पर चांद चाहते हैं लेकिन हम तिरंगा को चांद पर लहराता देखना चाहते हें।

यह भव्य आयोजन भगवान परशुराम के जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। इस महाकुंभ में धार्मिक प्रवचन और भजन-संध्या के साथ- साथ संत समागम, हवन-पूजन और वैदिक मंत्रोच्चार भी किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि प्रतिष्ठित गांधी मैदान में सनातन महाकुंभ 2025 का भव्य आयोजन किया जा रहा है। पहली बार इस महाकुंभ का आयोजन पटना में हो रहा है। इसमें बड़ी संख्या में देशभर के संत-महात्मा, जगद्गुरु और महामंडलेश्वर शामिल हुए।

चिराग ने बिहार विधानसभा की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का किया ऐलान

पटना, (हि.स.)। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में प्रदेश की सभी 243 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान खुले मंच से किया। चिराग के मंच से दिये गये इस बयान ने एनडीए गठबंधन में शामिल भाजपा और जदयू की मुश्किलें बढ़ा दी हैं।

चिराग पासवान रविवार को छपरा के राजेंद्र स्टेडियम में पार्टी द्वारा आयोजित 'नव-संकल्प महासभा' कार्यक्रम में शामिल हुए । इस दौरान जनसभा को संबोधित करते हुए चिराग ने कहा कि आज सारण की इस पावन धरती से आप सबके सामने मैं यह कहकर जा रहा हूं कि हां, मैं चुनाव लड़ूंगा। मैं चुनाव लड़ूंगा बिहारियों के लिए, अपने भाइयों के लिए, अपनी माताओं के लिए, अपनी बहनों के लिए और बिहार में एक ऐसी व्यवस्था तैयार करेंगे, एक ऐसा बिहार बनाएंगे जो सही मायनों में प्रदेश को विकास की राह पर आगे ले जाएगा। उन्होंने कहा कि मैं ना रुकने वाला हूं, ना थकने वाला हूं और डरता तो मैं किसी से नहीं हूं। जितनी ताकत आजमानी है आजमा लो। सर पर कफन बांध के निकला हूं कि जब तक बिहार को विकसित राज्य नहीं बना दूंगा, तब तक मैं भी चैन की सांस नहीं लूंगा। पर इसके लिए साथियों जरूरत है मुझे आप सब की। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने आरोप लगाया कि कई ऐसे लोग हैं जो नहीं चाहते कि चिराग पासवान बिहार आएं। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने बिहारी युवाओं को पलायन कर दूसरे राज्यों और देशों में रहने के लिए मजबूर किया, वे उसी तरीके से चाहते हैं कि चिराग पासवान अगर बिहार आ गए तो युवाओं को उनका हक दिलाएंगे।

धर्मस्थल मंदिर पर महिलाओं से रेप और हत्या के गंभीर आरोप

पूर्व सफाईकर्मी बोला- लाशें जलाने व दफनाने को मजबूर किया गया, मना करने पर पीटा, शिकायत दर्ज

● बेंगलुरु / (एजेंसी)

कर्नाटक के प्रसिद्ध धर्मस्थल मंदिर को लेकर बेहद गंभीर आरोप सामने आए हैं। यहां काम कर चुके एक पूर्व दलित सफाईकर्मी ने दावा किया है कि मंदिर प्रशासन से जुड़े प्रभावशाली लोगों ने उसे महिलाओं और बच्चियों के शव जलाने व दफनाने के लिए मजबूर किया। उसका कहना है कि इन महिलाओं के साथ बलात्कार कर उनकी हत्या की गई थी।

रिपोर्ट के अनुसार, सफाईकर्मी ने बताया कि उसने 1998 से 2014 तक मंदिर में काम किया और उसके पास तस्वीरें व दफनाए गए शवों के अवशेषों के सबूत हैं, जो उसने पुलिस को सौंप दिए हैं। उसने कहा, पछतावे और पीड़ितों को न्याय दिलाने की भावना के चलते अब मैं सामने आया हूं।

(शेष पेज 8 पर)

सबूत सुप्रीम कोर्ट के वकील को सौंपे

शिकायतकर्ता की तरफ से केस लड़ रहे वकीलों ओजस्वी गौड़ा और सचिन देशपांडे ने बताया कि फिलहाल आरोपी के नामों का खुलासा नहीं किया गया है। लेकिन सभी सबूत सुप्रीम कोर्ट के वकील केवी धनंजय को सौंप दिए गए हैं, ताकि अगर शिकायतकर्ता को कुछ हो जाए, तो सच्चाई सामने आ सके।

सुपरवाइजर ने दबाव बनाया, विरोध पर पीटा गया

शिकायतकर्ता ने बताया कि 1998 में उसके सुपरवाइजर ने पहली बार एक शव को चुपचाप ठिकाने लगाने को कहा। जब उसने मना किया, तो उसे बुरी तरह पीटा गया और उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दी गई। उसके मुताबिक, 2010 में उसे एक 12-15 साल की स्कूली लड़की की लाश मिली, जो स्कूल यूनिफॉर्म में थी, लेकिन उसकी स्कर्ट और अंडरगारमेंट गायब थे। शरीर पर बलात्कार और गला घोंटने के निशान थे। उसे स्कूल बैग सहित दफनाने को कहा गया। एक अन्य मामले में एक 20 वर्षीय महिला की लाश को पहले तेजाब से जलाया गया और फिर उसे अखबार में लपेटकर जलवाया गया।

अलर्ट | सुप्रीम कोर्ट प्रशासन ने केंद्र को पत्र लिखा, 4 जजों को अब तक नहीं मिला बंगला...

पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ से जल्द खाली कराएं सरकारी बंगला

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

पूर्व चीफ जस्टिस (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ अपने सरकारी बंगले (5, कृष्ण मेनन मार्ग) में तय समय सीमा से अधिक समय से रह रहे हैं। अब सुप्रीम कोर्ट प्रशासन ने केंद्र सरकार को पत्र लिखा है, जिसमें कहा गया है कि पूर्व सीजेआई से उनका बंगला जल्द से जल्द खाली कराया जाए ताकि उसे कोर्ट के हाउसिंग पूल में शामिल किया जा सके।

सुप्रीम कोर्ट में चीफ जस्टिस बीआर गवई सहित कुल 33 जज हैं, जबकि जजों की स्वीकृत संख्या 34 है। हालांकि, अभी तक शीर्ष कोर्ट के 4 जजों को सरकारी बंगला नहीं मिला है। रिपोर्ट के अनुसार, तीन जज सुप्रीम कोर्ट के ट्रांजिट अपार्टमेंट्स में और एक जज स्टेट गेस्ट हाउस में रह रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने जल्द से जल्द 5, कृष्ण मेनन मार्ग बंगला वापस करने की मांग की है।पूर्व सीजेआई ने यह भी बताया कि उन्होंने चीफ जस्टिस बीआर गवई से बात की थी और उन्हें भरोसा दिलाया था कि वह जल्द ही बंगला खाली कर देंगे। सुप्रीम कोर्ट के ऑफिशियल पत्र के अनुसार, पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ ने तब के सीजेआई संजीव खन्ना को रिटायरमेंट के एक महीने बाद लिखा था कि मेरे लिए यह अधिक सुविधाजनक होगा कि मुझे मौजूदा बंगले 5, कृष्ण मेनन मार्ग में 30 अप्रैल 2025 तक रहने की अनुमति दी जाए।

इस पर क्या बोले पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़...

बंगला खाली न कर पाने के संबंध में पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा, यह निजी कारणों से हुआ। मैंने सुप्रीम कोर्ट प्रशासन को इस बारे में जानकारी दी थी। मैं सरकारी बंगले में समयसीमा से ज्यादा नहीं रहना चाहता था, लेकिन मेरी बेटियों को कुछ विशेष सुविधाओं वाले घर की जरूरत है। इस साल फरवरी से मैं लगातार यात्रा कर रहा हूं और सर्विस अपार्टमेंट्स और होटलों का भी दौरा किया, लेकिन वहां रहना संभव नहीं था। उन्होंने यह भी बताया कि मैंने 28 अप्रैल को तब के चीफ जस्टिस संजीव खन्ना को लिखित में सूचित किया था कि मैं उपयुक्त घर की तलाश कर रहा हूं और मुझे 30 जून तक इस बंगले में रहने की अनुमति दी जाए, लेकिन इसका कोई जवाब नहीं मिला।

सुप्रीम कोर्ट प्रशासन ने चिट्ठी में क्या लिखा...

सुप्रीम कोर्ट प्रशासन ने 1 जुलाई को केंद्रीय आवास और नगरीय मामलों के मंत्रालय को पत्र लिखा, जिसमें कहा गया कि 5, कृष्ण मेनन मार्ग बंगला पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ के कब्जे में है। इस बंगले को रखने की अनुमति 31 मई 2025 को समाप्त हो गई थी। इसे शीघ्र खाली कराया जाए।

कुरुक्षेत्र में बनेंगे गीता के 18 अध्यायों से जुड़े द्वार

चंडीगढ़, (हि.स.)। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र को नई पहचान दिलाने की कवायद में लगी प्रदेश सरकार ने यहां गीता के 18 अध्यायों पर आधारित द्वार बनवाने का फैसला किया है। इसके अलावा गीता के प्रति श्रद्धालुओं व पर्यटकों का जुड़ाव बढ़ाने के लिए गीता स्टडी, मेडिटेशन और रिसर्च सेंटर बनाया जाएगा। हाल ही में हुई कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की 82वीं बैठक में लिए गए फैसलों पर अमल करने का काम अब शुरू हो गया है। नई योजना के अनुसार धर्मनगरी कुरुक्षेत्र में गीता के 18 अध्यायों पर 18 भव्य द्वार बनाए जाएंगें। फिलहाल, पिपली गीता द्वार और सन्निहित सरोवर सूर्य द्वार बनाए गए हैं। राज्यपाल की मौजूदगी में हुई बैठक के बाद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड को सभी द्वार बनाने की योजना का ड्राफ्ट तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन जगहों को भी चिह्नित किया जाएगा, जहां पर यह द्वार बनाए जाएंगे। इन स्थानामें में पिहोवा रोड ज्योतिसर, कुरुक्षेत्र-कैथल मार्ग, झांसा रोड व सेक्टर-3 बाईपास सहित कई अन्य स्थान हैं। सरकार ने अष्टकोशी परिक्रमा के पुनरुद्धार के निर्देश दिए हैं। कुरुक्षेत्र के बाहरी मोहल्ला स्थित प्राचीन नाभि कमल मंदिर से अष्टकोशी परिक्रमा शुरू होती है। अब परिक्रमा मार्ग का जीर्णोद्धार किया जाएगा, साथ ही श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए शेल्टर और पीने के पानी की व्यवस्था सहित अन्य प्रबंध किए जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

हरिद्वार गोलीकांड में वांछित कुख्यात नंदू गैंग का शूटर गिरफ्तार

नई दिल्ली,(हि.स.)। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की नॉर्दर्न रेंज ने गैंगस्टर कपिल सांगवान उर्फ नंदू गैंग के एक शूटर को दिल्ली के नरेला इलाके से गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपित की पहचान सामी खान उर्फ सन्नी के रूप में हुई है। आरोपित हरिद्वार, उत्तराखंड में दिनदहाड़े हुई सनसनीखेज फायरिंग की वारदात में शामिल था। स्पेशल सेल के डीसीपी अमित कौशिक के अनुसरा दो जून को हरिद्वार के सुखी नदी, खड़खड़ी इलाके में एक होटल व्यवसायी अरुण उर्फ सुखा पर जानलेवा हमला हुआ था। जांच में पता चला कि वह मंजीत महल गैंग के एक प्रमुख सदस्य का रिश्तेदार है, और इसी कारण उसे नंदू गैंग द्वारा निशाना बनाया गया। घायल अवस्था में अरुण को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी जान बच गई। डीसीपी के अनुसार स्पेशल सेल ने इस वारदात को गंभीरता से लेते हुए अपने खुफिया नेटवर्क को सक्रिय किया। पंजाब, हरियाणा और उत्तराखंड में सूत्रों को लगाया गया। इस बीच पता चला कि कपिल सांगवान उर्फ नंदू ने पंजाब के कुछ युवकों को इस वारदात को अंजाम देने के लिए चुना था। स्पेशल सेल की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर नरेला से आरोपित सामी खान उर्फ सन्नी को गिरफ्तार किया। पूछताछ में सन्नी ने बताया कि वह फगवाड़ा निवासी हिमांशु के संपर्क में आया था जो पहले से अपराधों में लिप्त था। दोनों की दुश्मनी फगवाड़ा के एक लोकल अपराधी से थी। इसी दुश्मनी के चलते वे कपिल सांगवान उर्फ नंदू के संपर्क में आए। जिसने उनकी मदद के बदले मंजीत महल गैंग के सदस्य के रिश्तेदार को मारने का टास्क सौंपा। दोनों ने तीन और युवकों को साथ मिलाया और दो जून को हरिद्वार पहुंचे। शाम करीब 5:30 बजे उन्होंने होटल के पास अरुण पर गोली चलाई। घटना के बाद सभी आरोपित पंजाब लौट गए। सन्नी कुछ समय नेपाल में छिपा रहा और दो दिन पहले ही दिल्ली आया था। पुलिस ने आरोपित के कब्जे से एक पिस्तौल और तीन जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं। हरिद्वार पुलिस को मामले की जानकारी दे दी गई है।

पुलिस ने दो सौ से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर आरोपित को दबोचा

नई दिल्ली, (हि.स.)। द्वारका जिले की सेंधमारी निरोधक शाखा ने दो सौ से अधिक घंटे की सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की जांच कर एक चोर को गिरफ्तार किया है। बदमाश की पहचान हिमांशु उर्फ पोटा के रूप में हुई है। बदमाश के कब्जे से पुलिस ने लाखों के गहने और तीन मोबाइल फोन बरामद किए हैं। गिरफ्तार बदमाश पालम थाने का घोषित बदमाश है उसपर पहले से झपटमारी, चोरी और सेंधमारी के 20 मामले दर्ज हैं। बदमाश की गिरफ्तारी से पुलिस ने छह मामले सुलझाने का दावा किया है। जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि 19 जून को महावीर एन्क्लेव निवासी असलम अली ने अपने घर से सोने और चांदी के गहने की चोरी होने शिकायत की। निरीक्षक विवेक मंडोला के नेतृत्व में पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। सीसीटीवी कैमरे की जांच में एक नकाबपोश चोर घर के पास घूमते देखा गया। 10 दिनों तक लगातार सीसीटीवी फुटेज देखने के बाद पुलिस बदमाश का पीछा करते हुए सागरपुर पहुंच गई। जहां चोरों ने अपना नकाब हटाया। मुखबिरों के जरिए एक बदमाश की पहचान हिमांशु के रूप में हुई। बाद में पुलिस ने शनिवार को बदमाश को महावीर एन्क्लेव से गिरफ्तार कर लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक सोने की चेन, एक सोने की मांग टीका, एक सोने का मंगलसूत्र, एक सोने की जेंट्स रिंग, छह सोने की नथ, चार जोड़ी सोने की बालियां और तीन चोरी के मोबाइल बरामद हुए। पूछताछ के बाद पुलिस ने बताया कि हिमांशु 2018 में पिता की मौत के बाद पढ़ाई छोड़ दी। वह आठवीं तक पढ़ा है। गलत संगत में वह स्मैक पीने लगा। फिर लत को पूरा करने के लिए आपराधिक वारदात को अंजाम देने लगा।

मवेशी की टक्कर से व्यक्ति यमुना में गिरा, मौत

नई दिल्ली, (हि.स.)। न्यू उस्मानपुर साढ़े तीन पुश्ते के पास रविवार सुबह पूजा सामग्री विसर्जित करने गए एक युवक को मवेशी ने टक्कर मार दी। युवक यमुना में गहरे पानी में जा गिरा और डूब गया। सूचना मिलते ही पुलिस के अलावा दमकल विभाग और बोट क्लब की टीम मौके पर पहुंच गई। काफी मशक्कत के बाद युवक का शव बरामद कर लिया गया। मृतक की पहचान देवी चरण (40) के रूप में हुई है। पुलिस ने उसका शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भेज दिया है। हालांकि वहां मौजूद कुछ लोगों ने दावा किया है कि यमुना किनारे बहाव की वजह से मिट्टी कटने से देवी चरण गहरे पानी में गिरा। तिमारपुर थाना पुलिस इसकी पड़ताल कर रही है। पुलिस के मुताबिक मूलरूप से अलीगढ़ उप्र का रहने वाला देवी चरण अपने परिवार के साथ भगत सिंह कालोनी, गौतमपुरी में रहता था। इसके परिवार में पत्नी पूनम के अलावा दो बेटी और एक बेटा है। देवी चरण चांदनी चौक इलाके में पिछले कई सालों से कपड़े की एक दुकान पर काम करता था।

मंत्री सिरसा ने डीयू में सिखों के बलिदान और संघर्ष पर आधारित पाठ्यक्रम को ऐतिहासिक बताया

नई दिल्ली, (हि.स.)। दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने आज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय इतिहास में सिख शहादत (1500-1765) से जुड़े स्नातक पाठ्यक्रम शुरू करने के निर्णय का स्वागत किया। उन्होंने इसे सिख समुदाय की न्याय, स्वतंत्रता और मानव गरिमा के लिए अडिग संघर्ष को सम्मान देने वाला एक ऐतिहासिक कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह पहल ऐसे समय में आई है जब देश सिखों के नवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी की 350वीं शहादत दिवस की तैयारियां कर रहा है। इससे पहले मंत्री ने सिख समाज के वरिष्ठ सदस्यों, बुद्धिजीवियों और दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक की थी, जिसमें गुरु तेग बहादुर की शहादत के उपलक्ष्य में आयोजन कैसे हो, इस पर सुझाव मांगे गए। उसी बैठक में यह सुझाव प्रमुखता से सामने आया था कि सिख गुरुओं की शिक्षाओं और बलिदानों पर एक समर्पित

विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम शुरू किया जाए। दिल्ली विश्वविद्यालय की यह पहल उसी परामर्श प्रक्रिया का सकारात्मक और समयानुकूल परिणाम है। मंत्री ने कहा कि यह सिर्फ एक पाठ्यक्रम नहीं है, यह हमारे गुरुओं को दी गई एक सभ्यतागत श्रद्धांजलि है। खासकर गुरु तेग बहादुर को, जिनका संदेश आज भी हमें सत्य के पक्ष में खड़े होने और दूसरों के अधिकारों की रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि यह पाठ्यक्रम छात्रों को सिख इतिहास, पहचान और बलिदान से परिचित कराएगा, जिसमें समाज सेवा, नेतृत्व और आध्यात्मिक साहस को विशेष रूप से शामिल किया जाएगा। इसके अंतर्गत फील्ड विज़िट, आर्काइव रिसर्च और डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग्स जैसी गतिविधियां भी होंगी ताकि विद्यार्थी सिख इतिहास को गहराई से समझ सकें। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का भी विशेष धन्यवाद किया, जिनके नेतृत्व में सिख इतिहास और विरासत को देश और दुनिया में नया सम्मान मिला है। मंत्री ने देश के अन्य विश्वविद्यालयों खासकर पंजाब के विश्वविद्यालयों से अपील की कि वे भी ऐसे पाठ्यक्रम शुरू करें ताकि सिख मूल्यों (न्याय, सेवा और बलिदान) को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके।

उन्होंने कहा कि यह पाठ्यक्रम नई पीढ़ी को हमारे गुरुओं के निडर और समावेशी आदर्शों के अनुसार जीने की प्रेरणा देगा।

आधे अधूरे के मंचन से पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को उजागर किया

नई दिल्ली, 5 जुलाई (दिव्य भारत ब्यूरो)। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडल के तरफ से आयोजित ग्रीष्मकालीन नाट्य महोत्सव के अंतर्गत सुप्रसिद्ध साहित्यकार, नाटककार मोहन राकेश के नाटक आधे अधूरे का भव्य मंचन अभिमंचन सभागार में किया गया। मोहन राकेश का नाटक आधे अधूरे रंगमंच और साहित्य के क्षेत्र में कालजयी माना जाता है। यह नाटक आधुनिक भारतीय समाज में मानवीय संबंधों, विशेष रूप से वैवाहिक जीवन की जटिलताओं, अधूरेपन और मनोवैज्ञानिक गहराई को उजागर करता है। मोहन राकेश के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में, एनएसडी रिपर्टरी गर्व के साथ उनके प्रतिष्ठित नाटक आधे अधूरे का मंचन प्रस्तुत किया, जो समर थिएटर फेस्टिवल

का हिस्सा है। इस ऐतिहासिक नाटक का पुनः मंचन लगभग 30 वर्ष बाद स्व श्रीमती त्रिपुरारी शर्मा ने निर्देशित किया था। जो भारतीय रंगमंच और हिंदी साहित्य में एक बड़ा नाम है। इस प्रस्तुति में मूल प्रमुख कलाकार प्रतिमा कन्नन और रवि खानविलकर पुनः मंच पर अपनी भूमिका बहुत खूबसूरती से निभाया। मंच सज्जा और प्रॉपर्टी का खूबसूरती से इस्तेमाल किया गया था। प्रकाश का अदभुत प्रयोग किया गया था।

द्वारका सेक्टर 7 में स्किल डेवलपमेंट सेंटर का भव्य उद्घाटन

नई दिल्ली (दिव्य भारत ब्यूरो)। आशीर्वाद फाउंडेशन ऑफ इंडिया कमजोर बच्चों के कौशल को विकसित करने के उद्येश्य से आरंभ कम्प्युटर की आवश्यकता होगी, जिसे समाज के सक्षम एवं समर्थ भल्ला, श्री संदीप सक्सेना, श्रीमती रचना सक्सेना, लायंस क्लब से

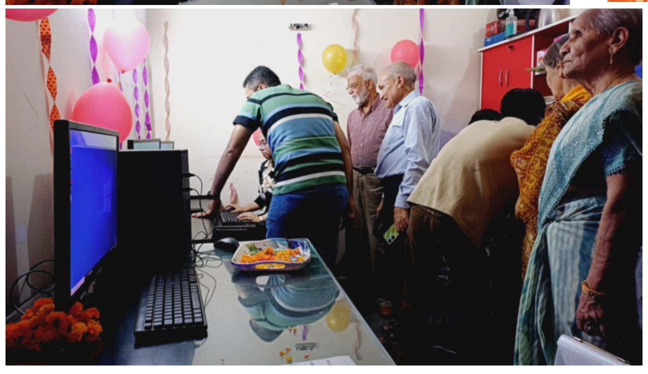

के तत्वाधान में आज द्वारका सेक्टर 7 में स्किल डेवलपमेंट सेंटर का भव्य उद्घाटन किया गया। इस सेंटर को शारिरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के कौशल को विकसित करने के उद्येश्य से आरंभ किया गया। इसमें प्रारंभिक रूप से 5 कम्प्युटर के माध्यम से कम्प्युटर ट्रेनिंग की शिक्षा दी जाएगी।

भविष्य में संस्थान को अतिरिक्त कम्प्युटर की आवश्यकता होगी, जिसे समाज के सक्षम एवं समर्थ व्यक्तियों के सहयोग से इस सेंटर को विस्तृत रूप दिया जाएगा ताकि डेढ सौ से अधिक बच्चे इसका लाभ उठा सकें। आने वाले समय में शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिये क्लिनिक भी आरंभ किया जाएगा। स्किल डेवलपमेंट सेंटर का उद्घाटन आर.के.जी. हॉस्पिटेलिटिज प्राइवेट लिमिटेड के एमडी श्री रविन्द्र कुमार गुप्ता जी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथियों के रूप में डॉ. राम अवतार शर्मा जी, श्री राजवीर सोलंकी जी, श्रीमती रमा भल्ला, श्री संदीप सक्सेना, श्रीमती रचना सक्सेना, लायंस क्लब से श्रीमती किरण गुलाटी, स्ट्रोनिक्स फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री रविकांत काबरा, एवं श्री रोहित मित्तल उपस्थित रहे।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर आशीर्वाद फाउंडेशन ऑफ इंडिया के संचालक एवं प्रेरणास्त्रोत डॉ. रमेश चन्द्र शुक्ला ने सभी विशिष्ट अतिथियों के साथ विशेषरूप से भगत चन्द्रा हॉस्पिटल, और डॉ. ए.के.केसर का धन्यवाद किया, जिनके सहयोग से निरंतर फ्री मेडिकल कैंप आयोजित होते रहते हैं। इनके कारण विशेष बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जाता है।

भारत के संविधान में असंवैधानिक रूप से जोड़े गए शब्द धर्मनिरपेक्ष व समाजवाद को हटाकर भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाए: गोयल

नई दिल्ली (दिव्य भारत ब्यूरो)। आज यूनाईटेड हिन्दू फ्रंट ने दक्षिणी दिल्ली जिला कार्यालय का भव्य उद्घाटन संतों के सानिध्य में एल-1500/9, चर्च कॉलोनी, संगम विहार, में नारियल फोड़कर व फिता काटकर किया। इस अवसर पर शिवास्त्र भी धारण कराये गए। मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए यूनाईटेड हिन्दू फ्रंट के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, वरिष्ठ भाजपा नेता व राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रवादी शिवसेना श्री जय भगवान गोयल जी ने कहा कि समय आ गया है कि भारत हिन्दू राष्ट्र घोषित होना चाहिए। हमेशा से शास्त्र और शस्त्रों के कारण से ही भारत की पहचान है। देश का सनातनी शास्त्रों पर तो आज भी अमल कर रहा है पर शस्त्रों को भूल गया है। इसलिए यूनाईटेड हिन्दू फ्रंट ने संतों के सानिध्य में सवा करोड़ सनातनियों को शिवास्त्र धारण कराके हिन्दू यौद्धा तैयार करने का निर्णय लिया है। आज श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर उन्हें नमन करते हुए गोयल ने कहा कि आदरणीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत में एक देश, दो संविधान व दो निशान का विरोध करते हुए अपने प्राणों की आहूती दी थी। 5 अगस्त 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में धारा 370 हटाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी गई थी। गोयल ने मंच के माध्यम से मुख्यमंत्री श्रीमति रेखा गुप्ता से भी अपील की कि पावन श्रावण मात्र में कांवड़ यात्रा के दौरान सभी होटलों एवं रेस्टोरेंटों, ढांबा संचालक व दवाई विक्रेता के मालिक अपने असली नाम व पहचान के बोर्ड लगाएं, ऐसा आदेश जारी किया जाये।

गोयल ने पूरे हिन्दू समाज को जात-पात, क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर एक होने, बुजुर्गों का सम्मान करने, अपने क्षेत्र की स्वच्छता और हर हिन्दू परिवार में 3-3 बच्चे हो इसका भी आहवान किया। कार्यक्रम का आयोजन विनोद नहाल उपाध्यक्ष दिल्ली प्रदेश व

■ संतों के मार्गदर्शन में दक्षिणी दिल्ली जिला कार्यालय का भव्य उद्घाटन एवं शिवास्त्र धारण समारोह संपन्न

नवनियुक्त जिला अध्यक्ष दिलबाग सिंह द्वारा किया गया। इस मौके पर नवनियुक्त पदाधिकारियों श्री जय प्रकाश (जिला उपाध्यक्ष, दक्षिणी दिल्ली), हेमंत कौशिक (अध्यक्ष, अम्बेडकर नगर वि.स.) मनीष बघेल (अध्यक्ष, संगम विहार विधान सभा), विकास भूरे (उपाध्यक्ष, देवली विधानसभा), ओमपाल (उपाध्यक्ष, देवली विधानसभा) की नियुक्तियां की गई।

गोयल ने प्रधानमंत्री मोदी जी से मंच के माध्यम से निवेदन किया कि जिस तरह धारा 370 हटायी, 3 तलाक कानून लागू किया, वक्फ बोर्ड कानून में संशोधन किया वैसे ही 21 जुलाई से शुरू होने वाले संसद सत्र में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा मनमर्जी तरीके से संविधान में जोड़े गए धर्मनिरपेक्ष व समाजवाद शब्द को हटाकर भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाए।

इस अवसर पर सर्वश्री गुरू मां कंचन गिरि जी, डा. राधाकांत वत्स, दिगंबर श्याम गिरि जी महाराज (तलवार वाले बाबा), सुशील गर्ग, शंकर लाल अग्रवाल, महेन्द्र मनचंदा, अवध कुमार, भाजपा दक्षिणी दिल्ली जिला अध्यक्ष माया सिंह बिष्ट, सतपाल सिंघल, ममता यादव पार्षद, शिव कुमार देवली आरडब्ल्यूए अध्यक्ष, पूजा चहल, मुकेश गुप्ता, सुनीता, नीरज, दीपक रावत, डॉ. के.के. पॉल, सूरज गुप्ता, आजाद कौशिक, देवेन्द्र सिंह अन्ना, ममता त्यागी, सहित कई हिन्दू संगठन के कार्यकर्ता, आरडब्ल्यूए के पदाधिकारी उपस्थित थे।

दैनिक पंचांग

7 जुलाई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

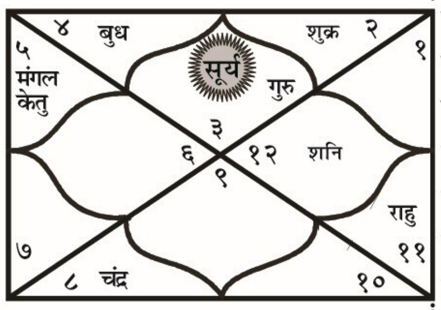

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मिथुन में	कर्क	06.05 बजे से
चंद्र	वृश्चिक में	सिंह	08.21 बजे से
मंगल	सिंह में	कन्या	10.33 बजे से
बुध	कर्क में	तुला	12.44 बजे से
गुरु	मिथुन में	वृश्चिक	14.59 ब.से
शुक्र	वृष में	धनु	17.15 बजे से
शनि	मीन में	मकर	19.20 बजे से
राहु	कुंभ में	कुंभ	21.06 बजे से
केतु	सिंह में	मीन	22.39 बजे से
राहुकाल		मेष	00.10 बजे से
7.30 से 9.00 बजे तक		वृष	01.50 बजे से
		मिथुन	03.48 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 188 वा दिन
दिशाशूल पूर्व **ऋतु** वर्षा।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1947
मास आषाढ़ **पक्ष** शुक्ल
पक्ष कृष्ण **तिथि** द्वादशी 23.11 बजे को समाप्त। **नक्षत्र** अनुराधा 01.12 बजे रात्र को समाप्त। **योग** शुभ 22.03 बजे को समाप्त। **करण** बव 10.16 बजे तदनन्तर बालव 23.11 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 11.6 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 22° 35'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872398
जूलियन दिन 2460863.5
कलियुग संवत् 5126
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना मोहर्रम
तारीख 11
विशेष देवशयनी एकादशी।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

भविष्यफल

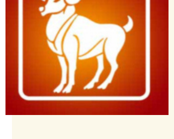

मेष : खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। आगे से रुपये पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बनें। शुभांक-3-6-9

वृष : प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ रहेगा। शुभांक-3-5-7

मिथुन : कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचे तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। संतान की उन्नति के योग हैं। शुभांक-4-6-7

कर्क : आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। शुभांक-2-5-6

सिंह : शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधानी रखें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। दैनिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। शुभांक-2-5-7

कन्या : सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। शुभांक-3-6-7

तुला : शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम होगा। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। शुभांक-5-7-9

वृश्चिक : समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। शुभांक-3-6-7

धनु : नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। सुविधाओं में शनैः-शनैः बाधा आएगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। शुभांक-3-5-6

मकर : सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। परिवार में अशांति रहेगी। शुभांक-1-4-5

कुंभ : समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास सफल होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। शुभांक-2-5-7

मीन : यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। शुभांक-2-4-6

▶ ब्रिक्स समिट को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा

ग्लोबल साउथ के बिना वैश्विक संस्थाएं ऐसी, जैसे बिना नेटवर्क वाला सिमकार्ड

मोदी बोले-आतंकवाद की निंदा हमारा सिद्धांत होना चाहिए, सुविधा नहीं

● रियो डी जनेरियो / (एजेंसी)

ब्रिक्स देशों की 17वीं समिट का आयोजन ब्राजील के रियो डी जनेरियो शहर के म्यूजियम ऑफ मॉडर्न आर्ट में हो रहा है। पीएम नरेंद्र मोदी ने रविवार को ब्रिक्स समिट में एक नई विश्व व्यवस्था की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि आज दुनिया को एक बहुध्रुवीय और समावेशी व्यवस्था की जरूरत है। इसकी शुरुआत वैश्विक संस्थाओं में बदलाव से करनी होगी। बैठक में पहलगाम आंतकी हमले की चर्चा हुई। मोदी बोले-आतंकवाद की निंदा हमारा सिद्धांत होना चाहिए, सुविधा नहीं। पीएम ने कहा कि 20वीं सदी में बनाई गई वैश्विक संस्थाएं 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं।

एआई के दौर में तकनीक हर हफ्ते अपडेट होती है, लेकिन एक वैश्विक संस्थान 80 सालों में एक बार भी अपडेट नहीं होती। 20वीं सदी के टाइपराइटर 21वीं सदी के सॉफ्टवेयर को नहीं चला सकते। प्रधानमंत्री ने कहा कि ग्लोबल साउथ के देश अक्सर डबल स्टैंडर्ड का शिकार रहे हैं। चाहे विकास हो, संसाधनों की बात हो, या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की, ग्लोबल साउथ को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई है। इनके बिना, वैश्विक संस्थाएं ऐसे मोबाइल की तरह हैं, जिसमें सिम कार्ड तो है लेकिन नेटवर्क नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में जिन देशों का योगदान ज्यादा है, उन्हें फैसले लेने का हक नहीं है।

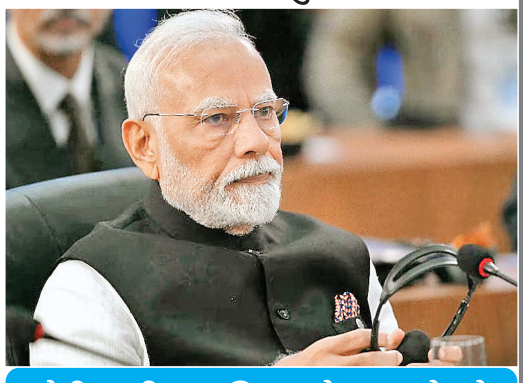

मोदी 12वीं बार ब्रिक्स में भाग ले रहे

12वीं बार ब्रिक्स समिट में भाग ले रहे हैं। वे ब्रिक्स के कई सदस्य देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय बातचीत भी कर रहे हैं। वे दो दिन के लिए राजकीय दौरे पर राजधानी ब्रासीलिया भी जाएंगे। ब्रासीलिया में पीएम मोदी राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा से द्विपक्षीय मुलाकात करेंगे। भारत ब्रिक्स में सीमा पार आतंकवाद पर अपनी चिंताओं को भी दोहरा सकता है। मोदी 2 जुलाई से 10 जुलाई तक, 5 देशों की यात्रा पर हैं। वे घाना, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, अर्जेंटीना के बाद रविवार सुबह ब्राजील पहुंचे हैं।

टाइपराइटर से 21वीं सदी का सॉफ्टवेयर नहीं चला सकते

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब दुनिया में हर हफ्ते एआई और तकनीक अपडेट हो रहे हैं, तब यह अस्वीकार्य है कि ग्लोबल इंस्टीट्यूशंस 80 वर्षों से बिना अपडेट के चल रही हैं। 20वीं सदी के टाइपराइटर से 21वीं सदी का सॉफ्टवेयर को नहीं चलाया जा सकता। यह संगठन समय के अनुसार खुद को बदलने की क्षमता रखता है।

सुधार के लिए इच्छाशक्ति दिखानी होगी: पीएम मोदी ने कहा कि ब्रिक्स का विस्तार और नए मित्रों का जुड़ना इस बात का सबूत है कि ब्रिक्स एक ऐसा संगठन है जो समय के हिसाब से खुद को बदल सकता है। अब हमें यूएनएससी, डब्ल्यूटीओ और बहुपक्षीय विकास बैंकों जैसी संस्थाओं में सुधार के लिए भी यही इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

ब्रिक्स समिट में जिनपिंग, पजशिकयान भी नहीं पहुंचे पुतिन भी वर्चुअली जुड़ेंगे

ब्राजील में आज से शुरू हो रही ब्रिक्स देशों के नेताओं की बैठक शुरू हो रही है। इस बैठक में 11 सदस्य देशों के नेता शामिल होंगे। ब्रिक्स संस्थापक देशों में शामिल चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग इसमें शामिल नहीं हो रहे हैं। 2013 में चीन का राष्ट्रपति बनने के बाद शी जिनपिंग पहली बार इस समिट में शामिल नहीं हो रहे हैं। उन्होंने पिछले कई सालों में ब्रिक्स को पश्चिमी वर्चस्व के विकल्प के रूप में खड़ा करने की कोशिश की है। जिनपिंग की जगह उनके भरोसमंद सहयोगी और चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग समिट में शामिल होंगे। सिंगापुर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर चोंग जा ईआन के मुताबिक ब्रिक्स चीन के लिए अभी भी पश्चिमी दबाव से बाहर निकलने का एक जरिया है। ऐसे में जिनपिंग के लिए घरेलू आर्थिक संकट और आने वाले राजनीतिक सम्मेलन की तैयारी ज्यादा अहम हो सकती है। हॉन्ग कॉन्ग यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफेसर ब्रायन वोंग के मुताबिक, जिनपिंग के न पहुंचने को ब्रिक्स के प्रति अनादर के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए।

जिनपिंग का न आना ब्राजील के लिए झटका नहीं: शी जिनपिंग का न आना ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा कोई बड़ा झटका नहीं है। जिनपिंग ने नवंबर 2024 में जी-20 समिट और एक स्टेट विजिट के लिए ब्राजील की यात्रा की थी। उस दौरान जिनपिंग और लूला ने कई समझौते साइन थे। इसके अलावा लूला भी मई में बीजिंग गए थे।

इजरायल ने गाजा पर फिर बरसाए बम

● तेल अवीव / (एजेंसी)

इजराइल और हमास के बीच चल रही जंग में एक और बड़ा हमला हुआ है। इजराइली सेना (आईडीएफ) ने गाजा सिटी में हमास के नौसेना बल के कमांडर रमज़ी रमज़ान अब्द अली सालेह को मार गिराया है। यह हमला गाजा में आईडीएफ द्वारा किए गए हवाई हमलों के दौरान हुआ, जिसमें हमास के दो और लड़ाके भी मारे गए हैं।

हमास के नौसेना कमांडर समेत 3 ढेर

सालेह हमास के भीतर एक महत्वपूर्ण रणनीतिक व्यक्ति था। हाल के हफ्तों में वह गाजा में तैनात इजराइली सैनिकों के खिलाफ समुद्री हमलों की योजना और उसे अंजाम देने में सक्रिय रूप से शामिल था। इस हमले में हमास के दो और वरिष्ठ सदस्य, हिशाम अयमान अतिया मंसूर और नसीम मोहम्मद सुलेमान अबू सब्हा भी मारे गए। मंसूर हमास की मोर्टार शेल यूनिट के डिप्टी हेड थे, जबकि अबू सब्हा भी उसी यूनिट से जुड़ा हुआ था।

स्मार्ट डिवाइस से हो रही थी इजराइल की जासूसी

बीजिंग भेजा जा रहा था इलेक्ट्रानिक डेटा

● तेल अवीव / (एजेंसी)

आईडीएफ के लेफ्टिनेंट कर्नल या कोई भी सैन्य अधिकारी अब चीन निर्मित इलेक्ट्रिक एटीटीओ बीवाईडी 3 कारों में नहीं घूमेंगे। साइबर और सूचना सुरक्षा विशेषज्ञों के लगातार दबाव के बाद, रक्षा मंत्रालय ने इस साल की शुरुआत में आईडीएफ अधिकारियों को इन चीनी कारों की आपूर्ति पर रोक लगा दी है।

यह पहली बार नहीं है, जब आईडीएफ ने चीनी कारों का इस्तेमाल किया है. तेल अवीव में रक्षा मंत्रालय के मुख्यालय की सुरक्षा के लिए वर्तमान में कई चीनी इलेक्ट्रिक एमजीजेडएस मॉडल का इस्तेमाल किया जा रहा है और बड़े परिवार वाले अधिकारियों को आपूर्ति की गई 600 चीनी इलेक्ट्रिक क्रॉसओवर चेरी टिग्गो 8 पहले से ही देश भर में चल रही हैं।

यह पहली बार है जब आई डीएफ अफसरों को उच्च सुरक्षा वाले आईडीएफ ठिकानों में चीनी वाहन को लेकर प्रवेश करने से बैन किया है। आईडीएफ के ठिकाने के अंदर प्रवेश करने के लिए, आपातकालीन ई-कॉल प्रणाली ओर दुर्घटना की स्थिति में स्वचालित रूप से आपातकालीन हॉटलाइन से संपर्क करने डिजाइन की गई प्रणाली को पूरी तरह से डिस्कनेक्ट कर दिया गया है।

दिल्ली विवि में अब सिख शहादत पर होगी पढ़ाई

नई दिल्ली, (हि.स.)। दिल्ली यूनिवर्सिटी (डीयू) ने भारतीय इतिहास में सिख शहादत (1500-1765) को जनरल इलेक्टिव (जीई) कोर्स के रूप में मंजूरी दे दी है। यह कोर्स डीयू के सभी कॉलेजों में पढ़ाया जाएगा। इसका उद्देश्य सिख समुदाय के बलिदान, धार्मिक उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष और इतिहास में उनके योगदान को समझाना है। यह 4 क्रेडिट का स्नातक कोर्स होगा, जिसमें कोई भी 12वीं पास छात्र दाखिला ले सकता है। कोर्स में सिख धर्म का विकास, गुरु साहिबानों की शहादत, बंदा सिंह बहादुर से लेकर भाई मनी सिंह, बाबा दीप सिंह जैसी प्रमुख शख्सियतों की वीरगाथाएं पढ़ाई जाएंगी।

टेक्सास में भारी बारिश और बाढ़ से 70 लोगों की मौत

● टेक्सास / (एजेंसी)

अमेरिका के टेक्सास राज्य में शुक्रवार को भारी बारिश के बाद ग्वाडालूप नदी में अचानक आई बाढ़ से 70 लोगों की मौत हो गई। नदी के पास लड़कियों का एक समर कैंप था, जो बाढ़ की चपेट में आ गया। कैंप में मौजूद 750 लड़कियों को बचाया गया। जबकि लगभग 27 लड़कियां लापता हैं। अधिकारियों ने बताया कि टेक्सास के सैन एंटोनियो से लगभग 15 इंच (38 सेमी) तक बारिश हुई। महज 45 मिनट में नदी का लेवल 26 फीट बढ़ गया, जिससे घर और गाड़ियां बह गईं। टेक्सास के गवर्नर डैन पैट्रिक ने बताया-बाढ़ का खतरा अभी भी बरकरार है। रेस्क्यू टीमें काम कर रही है। जिसमें नौ बचाव दल, 14 हेलिकॉप्टर और 12 ड्रोन शामिल है। अभी तक 850 से ज्यादा लोगों को बचाया भी गया है।

मोदी ने जताया शोक

पीएम नरेंद्र मोदी ने एक्स पर पोस्ट कर टेक्सास में आई विनाशकारी बाढ़ के कारण बच्चों की मौत पर दुख जताया। उन्होंने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की। टेक्सास की ग्वाडालूप नदी में शुक्रवार को बाढ़ आने से कर्बविल, सेंटर पॉइंट जैसे इलाकों में पानी भर गया। टेक्सास की ग्वाडालूप नदी में बाढ़ से कई घर डूब गए। जिससे लोगों को परेशानियां हो रही है। शुक्रवार को बाढ़ की वजह से बहुत सा मलबा बहकर सड़कों पर आ गया, जिससे सड़कें जाम हो गईं। कर्विल के पास मौजूद कैंप मिस्टिक, जहां कई सारी लड़कियां रुकी हुई थीं।

ऑटोमोबाइल पर अमेरिका ने 25 फीसदी ड्यूटी थोपी, भारत ठोकेगा जवाबी टैरिफ

चावल, डेयरी, गेहूं पर कोई डील नहीं,भारत ने ट्रेड डील पर खींची रेडलाइन

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

भारत जल्द ही अमेरिका पर जवाबी टैरिफ लगाने का ऐलान कर सकता है। क्योंकि, अमेरिका ने पैसेंजर व्हीकल, छोटे ट्रक और कुछ ऑटोमोबाइल कंपोनेंट्स पर 25 फीसदी ड्यूटी लगाने का फैसला किया है, जिससे भारत का 2.89 बिलियन डॉलर (करीब 24,710 करोड़ रुपए) का एक्सपोर्ट प्रभावित हो सकता है। 23 मार्च 2018 को अमेरिका ने भारत के स्टील प्रोडक्ट्स पर 25 फीसदी और एल्युमीनियम प्रोडक्ट्स पर 10 फीसदी टैरिफ लगाया था। जनवरी 2020 में इसे आगे के लिए बढ़ा दिया था। भारत ने एक ऑफिशियल नोटिफिकेशन में डब्ल्यूटीओ के साथ यह प्रस्ताव शेयर किया है।

अब अमेरिका के पाले में गेंद

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की 9 जुलाई की टैरिफ डेडलाइन से पहले भारत ने मिनी ट्रेड डील पर रेड लाइन खींच दी है। भारतीय अधिकारियों के अनुसार, मिनी या अंतरिम ट्रेड डील पर फैसला अब अमेरिका पर निर्भर है। भारत सरकार के सूत्रों ने कहा कि अमेरिका के साथ ट्रेड डील को लेकर उनका रुख सकारात्मक है. उन्होंने कहा कि जो बातचीत होनी थी पूरी हो चुकी है, अब कोई और दौर की बातचीत नहीं होगी। सूत्रों के मुताबिक भारत के हितों को ध्यान में रखकर अमेरिका के सामने एक उचित सौदे का प्रस्ताव रखा गया है। उन्होंने कहा कि ट्रेड डील को लेकर अमेरिका के साथ हुई बातचीत में भारत के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे चावल, डेयरी, गेहूं और अन्य जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों पर कोई बदलाव नहीं किया गया है। अंतरिम व्यापार समझौते में स्टील, ऑटो, एल्युमीनियम पर रीजनल टैरिफ की संभावना नहीं है।

मामले सुलझ गए तो 9 जुलाई से पहले हो जाएगी घोषणा: सूत्रों नेबताया कि यदि मामले सुलझ जाते हैं तो 9 जुलाई से पहले अमेरिका और भारत के बीच अंतरिम व्यापार समझौते की घोषणा की जा सकती है।

निपाह प्रकोप: सजग सरकार, तीन जिलों में बुखार की निगरानी होगी

वायरस से 425 व्यक्ति प्रभावित, इलाज जारी

● तिरुवनंतपुरम / (एजेंसी)

केरल सरकार निपाह वायरस प्रकोप को लेकर सजग हो गयी है और राज्य के तीन जिलों के प्रभावित क्षेत्रों में बुखार की निगरानी करने के आदेश दिये हैं। स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने शनिवार को कहा कि निपाह वायरस संपर्क सूची में कुल 425 व्यक्ति हैं।

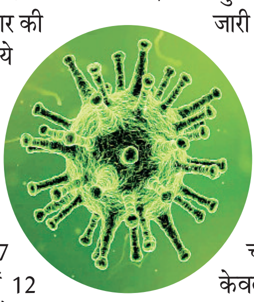

इनमें से 228 मलप्पुरम, 110 पलक्कड़ और 87 कोझीकोड से हैं। मलप्पुरम में 12 लोग वर्तमान में उपचाराधीन हैं, जिनमें से पांच गहन चिकित्सा कक्ष (आईसीयू) में हैं। उन्होंने कहा कि संपर्क सूची में शामिल एक व्यक्ति की जांच रिपोर्ट निगेटिव आयी है। पलक्कड़ में एक व्यक्ति आइसोलेशन में है। पलक्कड़ में संपर्क सूची में शामिल लोगों में 61 स्वास्थ्यकर्मी हैं। कोझीकोड में संपर्क सूची में शामिल सभी 87 व्यक्ति स्वास्थ्यकर्मी भी हैं। उन्होंने कहा कि प्रभावित क्षेत्रों में बुखार की निगरानी करने के निर्देश जारी किए गए हैं।

मानसिक स्वास्थ्य सहायता सुनिश्चित की जानी चाहिए। पलक्कड़ में संपर्क सूची में शामिल व्यक्तियों को जिले के भीतर ही आइसोलेट (अलग-थलग) किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि केवल नमूनों को जांच के लिए भेजने की जरूरत है। पलक्कड़ और मलप्पुरम से पुष्टि किए गए निपाह के मामलों के रूट मैप प्रकाशित किए गये हैं। कानिवू 108 सेवा के तहत एम्बुलेंस सहित, सभी तैयार हैं। संक्रमण के स्रोत का पता लगाने के प्रयास तेज कर दिए गये हैं।

ट्रम्प की सुरक्षा में बड़ी सेंध, राष्ट्रपति के गोल्फ कोर्स के ऊपर उड़ रहे प्लेन को लड़ाकू विमान ने खदेड़ा

● न्यूजर्सी / (एजेंसी)

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और फर्स्ट लेडी जब वीकेंड पर न्यू जर्सी के बेडमिंस्टर स्थित निजी गोल्फ कोर्स में मौजूद थे, उसी दौरान उनकी सुरक्षा में बड़ी सेंध से हड़कंप मच गया। शनिवार 5 जुलाई को एक नागरिक विमान ने अस्थायी उड़ान प्रतिबंध (टीएफआर) का उल्लंघन किया, जिसके बाद उत्तरी अमेरिकी एयरोस्पेस डिफेंस कमांड (नोराड) के लड़ाकू विमान ने तुरंत कार्रवाई करते हुए उस विमान को इंटरसेप्ट कर रोक दिया।

नोराड ने जानकारी दी कि यह घटना दोपहर 2.39 बजे (ईडीटी) हुई जब नागरिक विमान ने प्रतिबंधित हवाई क्षेत्र में प्रवेश किया। नोराड के फाइटर जेट ने हेडबट रणनीति अपनाते हुए पायलट का ध्यान खींचा और विमान को सुरक्षित रूप से प्रतिबंधित क्षेत्र से बाहर निकाल दिया गया।

एक दिन में पांच बार किया नियमों का उल्लंघन

बयान में बताया कि यह दिन भर में पांचवां टीएफआर उल्लंघन था। इससे पहले तीन और उल्लंघन हो चुके थे जिससे सुरक्षा एजेंसियों की चिंता और बढ़ गई। यूएस एयरफोर्स ने सभी पायलटों को एफएए द्वारा जारी नोटम (नोटिस टू एयर मिशन) पढ़ने, पालन करने की सख्त हिदायत दी है। एयरफोर्स ने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि यदि आप बेडमिंस्टर, न्यूजर्सी के आस-पास उड़ान भरने की सोच रहे हैं, तो नोटम 1353, 1358, 2246, और 2247 पर जरूर नजर डालें। ये सुरक्षा के लिए हैं। सावधान रहें और प्रतिबंधित हवाई क्षेत्र से बाहर रहें। नोराड द्वारा टीएफआर उल्लंघन की स्थिति में कैसे कार्रवाई की जाती है, इसके लिए उन्होंने एक वीडियो लिंक भी साझा किया है, जो जागरूकता बढ़ाने के लिए है।

कैब बुक कर पहाड़ों में ले जाते, हत्या कर फेंक देते थे लाश

क्राइम ब्रांच की कार्रवाई, पकड़ा गया सीरियल किलर

● नई दिल्ली / (हि.स.)

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच (आरकेपुरम टीम) ने एक ऐसे सीरियल किलर को गिरफ्तार किया है, जो अपने साथियों के साथ मिलकर कैब ड्राइवरों की बेरहमी से हत्या करता था। आरोपी अजय लांबा को इंडिया गेट इलाके से पकड़ा गया है। वह अब तक चार कैब ड्राइवरों की हत्या कर चुका है, जिनकी लाशें उत्तराखंड की पहाड़ियों की खाइयों में फेंकी गईं।

कैसे करते थे वारदात

पुलिस जांच में सामने आया है कि गैंग पहले किराये पर कैब बुक करता था। ड्राइवर को

उत्तराखंड की तरफ ले जाकर पहले नशीला पदार्थ पिलाया जाता, फिर गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी जाती थी। इसके बाद शव को अल्मोड़ा, हल्द्वानी या उधमसिंह नगर की गहरी खाइयों में फेंक दिया जाता, ताकि लाश कभी बरामद न हो। हत्या के बाद आरोपी कैब को नेपाल ले जाकर ऊंचे दामों में बेच देते थे।

नेपाल में रहकर की शादी पहले भी जा चुका है जेल

गिरफ्तार अजय लांबा करीब 10 साल तक नेपाल में छिपा रहा। वहीं की एक युवती से शादी भी की। उससे पहले वह दिल्ली में ड्रग्स तस्करी और ओडिशा में डकैती जैसे गंभीर मामलों में जेल जा चुका है। इस गिरोह के अन्य दो सदस्य—धीरेंद्र और दिलीप पांडे—पहले ही गिरफ्तार किए जा चुके हैं। जबकि एक अन्य आरोपी धीरज अब भी फरार है। पुलिस उसकी तलाश में जुटी है। दिल्ली, उत्तराखंड और नेपाल तक फैले इस खूंखार गैंग के नेटवर्क को दिल्ली पुलिस ने निशाने पर लिया है। अजय लांबा से पूछताछ जारी है, और उम्मीद की जा रही है कि इससे कई गुमशुदा कैब ड्राइवर केसों की गुत्थी सुलझ सकती है।

शब्द पहेली - 8546

1	2	■	3	4	5	■	6	7
8		9	■	10		11	■	
■	12		13	■	14		15	■
16	■	17		18	■	19		20
21	22	■	23		24	■	25	
26		27	■	28		29	■	
■	30		31	■	32		33	■
34	■	35		36	■	37		38
39		■	40			■	41	

बाएँ से दाएँ

1.इच्छा, मन्नत-2
3.आश्रय, शरण-3
6.ठाठ-बाट-2
8.प्रकार-3
10.आवरण-3
12.तीर्थ, धार्मिक यात्रा-3
14.ख्वाब, स्वप्न-3
17.घर, आवास-3
19.लोच-3
21.भस्म, खाक-2
23.निगाह, दृष्टि-3
25.संबोधन-2
26.देवर्षि-3
28.तिजोरी-3
30.तरंग, हिलोर-3
32.गुंडा, बदमाश-3
35.अनुकृति-3
37.नाप करना-3
39.थोड़ा-2
40.उल्टी, कै-3
41.मां के पिता-2

ऊपर से नीचे

1.सप्तम, सातवां-2
2.पृथ्वी, वसुंधरा-3
4.घ्राणेंद्रिय-2
5.वासना, लालसा-3
7.खुमार, सरूर-2
9.रनिवास (उर्दू-3)
11.चतुर, तेज-3
13.थकावट-3
15.नृत्य करना-3
16.कुल, खानदान, वंश-3
18.पुराना जुकाम-3
20.कटि, शरीर का मध्यांग-3
22.ईमामदस्ता-3
24.नकद राशि, रोकड़-3
27.जलने की क्रिया-3
29.रवानगी, विदा होना-3
31.राशि, धन-3
33.आलेप करना, पोतना-3
34.रहस्य-2
36.बुरी आदत-2
38.अनेक प्रकार-2

शब्द पहेली -8545 का हल

श	ब	■	ता	■	य	■	लॉ	क
रा	■	ला	ल	■	श	ह	■	हा
ब	से	रा	■	सा	■	क	स	र
■	ना	■	आ	स	रा	■	र	■
अ	ना	मि	का	■	श	रा	फ	त
■	य	■	र	ह	न	■	रो	■
म	क	र	■	र	■	प्रे	श	र
लि	■	ज	मा	■	आ	स	■	स
न	र	■	न	■	म	■	आ	ना

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

सूडोकु नवताल- 7483

★★★✯☆ मध्यम

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

Jagrutidaur.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7482 का हल

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7

संपादकीय

लोकतंत्र की अधूरी तश्वीर पूरी करने का समय

2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम भारतीय लोकतंत्र की दिशा में एक ऐतिहासिक हस्तक्षेप है। यह केवल एक विधायी घोषणा नहीं, बल्कि एक सामाजिक और राजनीतिक उद्घोषणा है कि भारत अब अपनी आधी आबादी को लोकतंत्र की मुख्यधारा में लाने को तैयार है। लेकिन इस घोषणा की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब इसके पीछे राजनीतिक इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और तैयारियों की ठोस बुनियाद हो। यह आरक्षण 2029 के आम चुनावों में लागू होगा, परन्तु इसकी नींव आज और अभी से ही रखनी होगी। वर्तमान में भारतीय संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बेहद सीमित है। 2024 की 18वीं लोकसभा में केवल 74 महिला सांसद चुनी गईं, जो कुल सांसदों का मात्र 13.6 प्रतिशत हैं। यह आंकड़ा वैश्विक औसत 26.9 प्रतिशत से बहुत कम है। राज्य विधानसभाओं की स्थिति और भी चिंताजनक है, जहाँ औसतन 9 प्रतिशत से भी कम महिलाएं विधायक हैं। यह असमानता न केवल लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को अधूरा बनाती है, बल्कि नीति निर्माण की प्रक्रिया से भी महिलाओं को वंचित रखती है। राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के पीछे कई जटिल कारक हैं। इनमें सबसे प्रमुख है सामाजिक संरचना में गहरे पैठी पितृसत्तात्मक सोच। महिलाओं को परंपरागत भूमिकाओं में बाँध कर रखा गया है, जिससे वे सार्वजनिक जीवन में हिस्सेदारी की आकांक्षा नहीं कर पातीं। इसके अलावा, चुनाव लड़ने की प्रक्रिया में अत्यधिक धन की आवश्यकता, राजनीति का आक्रामक और अक्सर असुरक्षित वातावरण, और राजनीतिक दलों के भीतर अवसरों की कमी भी उन्हें पीछे ढकेलती है। राजनीतिक दलों के भीतर यह धारणा भी व्यापक रूप से प्रचलित है कि महिलाएं चुनाव में कमजोर प्रत्याशी होती हैं। यह मिथक 2024 के लोकसभा चुनावों में खारिज हुआ, जब महिला उम्मीदवारों की जीत की दर पुरुषों की तुलना में अधिक रही। जहां महिलाओं की कुल हिस्सेदारी उम्मीदवारों में मात्र 9.6 प्रतिशत थी, वहीं उन्होंने कुल 13.6 प्रतिशत सीटें जीत लीं। यह तथ्य दशार्ता है कि अवसर मिलने पर महिलाएं प्रभावी और स्वीकार्य नेता बन सकती हैं। परन्तु अवसर देने के लिए राजनीतिक दलों को प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए कि 2029 आए और कानून उन्हें बाध्य करे। उन्हें स्वैच्छिक रूप से अपने टिकट वितरण में 33 प्रतिशत महिलाओं को स्थान देना चाहिए। आंतरिक कोटा नीति का यह पहला कदम भारत की राजनीतिक संस्कृति को बदलने की दिशा में अग्रसर कर सकता है। कई देशों के उदाहरण, जैसे ऑस्ट्रेलिया की लेबर पार्टी दिखाते हैं कि इस प्रकार के कोटा राजनीति में महिलाओं की स्थायी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। वित्तीय सहयोग भी अत्यंत आवश्यक है। चुनावी खर्च वहन करने में महिलाओं की असमर्थता को देखते हुए दलों को महिला उम्मीदवारों के लिए विशेष चुनावी फंड बनाने चाहिए। कनाडा का जूडी लामार्श फंड इसका उदाहरण है। साथ ही, पंचायत और नगरपालिका स्तर पर काम कर रही महिलाओं को उच्च स्तर की राजनीति के लिए तैयार करने हेतु संरचित नेतृत्व विकास कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। संगठनात्मक संरचना में भी महिलाओं की भागीदारी को व्यापक बनाया जाना चाहिए। केवल महिला मोर्चा बनाकर उन्हें सीमित कर देना नेतृत्व निर्माण की प्रक्रिया को बाधित करता है। राजनीतिक दलों की नीति निर्माण समितियों, कोर टीमों, मीडिया पैनलों और प्रवक्ता मंडलों में महिलाओं को सक्रिय भागीदारी मिलनी चाहिए। साथ ही, उन्हें निर्णय लेने की वास्तविक शक्तियाँ भी दी जानी चाहिए, न कि केवल प्रतीकात्मक भूमिकाएँ। अनुभवी महिला नेताओं द्वारा नवोदित नेताओं को मेंटोरशिप देने की व्यवस्था भी एक मजबूत पहल बन सकती है। इससे नेतृत्व क्षमता, नीति समझ और आत्मविश्वास का विकास होगा।

वीरांगना

स्वाधीनता आन्दोलन की साहसी महिलाएं

अंबा बाई

अंबा बाई का जन्म पूर्व मैसूर राज्य में 1989 में एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परियार (अब कर्नाटक में) में हुआ था। उनका विवाह श्री श्रीनिवास राव के साथ हुआ, जो एक पुलिस अधिकारी ये, दुर्भाग्यवश जस वह 24 साल की थी तब विधवा हो गई। उनके पति एक अच्छे तैराक थे, परंतु 1913 मेंकैपबुडी झील में तैरते समय एक भँवर में फैराने से उनकी अचानक मृत्यु हो गई।

अंबी अंबा बाई का उपनाम था, जब वह कम प्रायु में विधवा हुई, तब शिक्षा के साथ खुद को सशक्त बनाकर आगे बढ़ीं और प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाप्त की। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, कई बार गिरफ्तार हुई, जिसमें उन्हें कठोर सजा मिली। उन्होंने कई मौकों पर शक्तिशाली भाषण दिए, कताई सिखाई और समाज की रूढ़िवादी प्रकृति को चुनौती दी। वह कॉलेज गई, आर्थिकरूप से स्वतंत्र हो गई, और अंतत वेंगलुरु में वाणी विलास गर्ल्स स्कूल की प्रिंसिपल वन गई।

अंबा बाई की कहानी धैर्य और दृढ़ संकल्प की जाया है। यह उन महिलाओं के लिए प्रेरणा का काम करती है, जो आज की दुनिया में भी उत्पीड़न का सामना करती हैं। अंवा बाई को अपने प्रबुद्ध पिता श्री सी. कृष्णा राव, जिन्हें प्यार से 'रायारू' के नाम से जाना जाता है, और उनके सहयोगियों का समर्थन प्राप्त था, जिस कारण अंबा बाई सामाजिक कुरीतियों से लड़ने में कामयाब हुई।

प्यार, साहस और मजबूत मूल्यों की विरासत छोड़कर अंबाबाई 1971 में 82 वर्ष की आयु में सद्‌गति को प्राप्त हुई।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जीराष्ट्र को समर्पित जीवन

डॉ. सौरभ मालवीय

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महान शिक्षाविद्, गंभीर चिन्तक एवं भारतीय जनसंघ के संस्थापक थे। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं सांस्कृतिक चेतना को समर्पित था। वह केवल एक राजनेता नहीं थे, अपितु भारत माँ के सपूत थे। उनकी दूरदर्शिता, निर्भीकता एवं प्रतिबद्धता आज भी प्रेरणास्रोत बनी हुई है। वह कहते थे- राष्ट्रीय एकता के धरातल पर ही सुनहरे भविष्य की नींव रखी जा सकती है। राष्ट्रीय हितों की प्रतिबद्धता को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानना चाहिए।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता में हुआ था। उनका परिवार धर्म परायण था। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। उनके संपूर्ण जीवन पर इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

उनके पिता आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति थे।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात वह वर्ष 1923 में सेनेट के सदस्य बने। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात वर्ष 1924 में उन्होंने कलकत्ता उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में नामांकन कराया। कुछ समय पश्चात अर्थात वर्ष 1926 में वह इंग्लैंड चले गए। वहां उन्होंने वर्ष 1927 में बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। वह अत्यंत परिश्रमी थे। इसलिए निरंतर सफलता की सीढ़ियां चढ़ रहे थे। वह मात्र 33 वर्ष की आयु में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बन गए। उन्होंने वर्ष 1938 तक कुलपति का कार्यभार संभाला। अपने कार्यकाल में उन्होंने सुधार के अनेक उल्लेखनीय कार्य किए। इस समयावधि में उन्होंने 'कोर्ट एंड काउंसिल ऑफ इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बैंगलोर' तथा इंटर यूनिवर्सिटी बोर्ड के सक्रिय सदस्य के रूप में भी उल्लेखनीय कार्य किए।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का राजनीतिक जीवन कांग्रेस से प्रारंभ हुआ था। उन्हें कांग्रेस प्रत्याशी एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में बंगाल विधान परिषद का सदस्य चुना गया था। परन्तु कांग्रेस ने विधायिका का बहिष्कार करने का निर्णय ले लिया। इसके कारण उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। तदुपरांत उन्होंने स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा एवं विजय प्राप्त की।

उन्हें वर्ष 1943 में अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष मनोनीत किया गया था। उन्होंने वर्ष 1946 तक यह कार्यभार संभाला। देश की स्वतंत्रता के पश्चात प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अंतरिम सरकार में सम्मिलित किया। उन्हें उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री बनाया गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू से मतभेद के कारण उन्होंने अपनी दिशा परिवर्तित कर ली। उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली के मध्य हुए समझौते के पश्चात 6 अप्रैल 1950 को मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजनीति के माध्यम से जनसेवा करने के प्रबल पक्षधर थे। वह मानते थे कि राजनीति के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों का कल्याण किया जा सकता है। उन्होंने संघ की राजनीतिक शाखा बनाने के लिए हिंदू महासभा छोड़ दी थी। इस संबंध में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी अर्थात माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर से भेंट कर प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में दिल्ली के कन्या माध्मिक विद्यालय में आयोजित एक सम्मलेन में भारतीय जनसंघ के गठन की घोषणा की गई। इस प्रकार 21 अक्टूबर, 1951 को भारतीय जनसंघ का गठन किया गया। सम्मलेन में आयताकार भगवा ध्वज स्वीकृत हुआ, जिस पर अंकित दीपक को चुनाव चिन्ह के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही लोकसभा चुनाव का घोषणा-पत्र भी स्वीकृत किया गया। इसका श्रेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को ही जाता है।

वर्ष 1951-52 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनसंघ के तीन प्रत्याशियों ने विजय प्राप्त की, जिनमें डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी

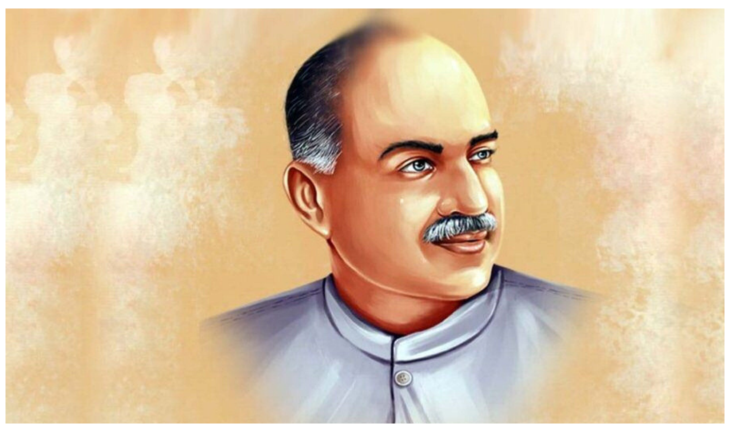

सम्मिलित थे। इसके पश्चात उन्होंने 32 लोकसभा एवं 10 राज्यसभा सांसदों के सहयोग से नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। वे देश की अखंडता एवं कश्मीर के विलय के प्रबल समर्थक थे। अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को हटाने के लिए भारतीय जनसंघ ने हिन्दू महासभा एवं रामराज्य परिषद के साथ मिलकर सत्याग्रह आरंभ किया।

वह जम्मू-कश्मीर से धारा-370 समाप्त करके इसे भारत का अभिन्न अंग बनाने के इच्छुक थे। उन्होंने संसद में दिए अपने भाषण में धारा-370 को समाप्त करने का स्वर मुखर किया। उन्होंने अगस्त 1952 में जम्मू कश्मीर में आयोजित एक विशाल रैली में कहा- या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊंगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर दूंगा।

अपने इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए उन्होंने वर्ष 1953 में बिना परमिट लिए जम्मू-कश्मीर की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। उन्हें 11 मई 1953 को उन्हें परमिट सिस्टम का उल्लंघन करके कश्मीर में प्रवेश करते समय गिरफ्तार कर लिया गया। इसके पश्चात विषम परिस्थितियों में 23 जून, 1953 को उनका निधन हो गया।

अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर उनकी माता योगमाया देबी ने कहा था-

मेरे पुत्र की मृत्यु भारत माता के पुत्र की मृत्यु है।

देश की एकता एवं अखंडता के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचार एवं सिद्धांत प्रेरणादायी हैं। उन्होंने कश्मीर के संबंध में एक नारा दिया था- नहीं चलेगा एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान

उनका यह विचार आज भी देश की एकता का मूल मंत्र है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी का कहना था कि वास्तविक राष्ट्रीय प्रगति धार्मिक शिक्षाओं का उल्लंघन करके नहीं, अपितु धार्मिक शिक्षाओं को अधिक दृढ़ता से अपनाने से प्राप्त की जा सकती है। वह सांस्कृतिक एकता पर भी विशेष बल देते थे। उन्होंने कहा था- यदि भारत की स्वतंत्रता को सारपूर्ण बनाना है, तो इसे भारत की संस्कृति के मूल्यों और आधारभूत तत्वों को ठीक प्रकार से समझने और इसके प्रचार एवं प्रसार में मददगार बनना पड़ेगा। जो भी राष्ट्र अपनी पुरातन उपलब्धियों से गौरव महसूस नहीं करता या प्रेरणा नहीं लेता, वह कभी भी न तो अपने वर्तमान को निर्मित कर सकता है और न ही कभी भी अपने भविष्य की रूपरेखा तैयार कर सकता है। कोई भी कमजोर राष्ट्र कभी भी महानता की ओर अग्रसर नहीं हो सकता।

वह कहते थे- आप जो भी काम करते हैं, इसे गंभीरता से अच्छी तरह करें। इसे कभी भी आधा अधूरा नहीं करें। तब तक स्वयं को संतुष्ट न समझें जब तक कि आप इसमें अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे दें। अनुशासन और गतिशीलता की आदतों को विकसित करें। अपने दृढ़ विश्वास को न टूटने दें।

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह कहते हैं कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का जीवन राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समर्पण, शिक्षा और विकास के नवीन विचारों का एक अद्भुत संगम था। बंगाल की रक्षा के लिए उनके संघर्ष और कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने के लिए उनके सर्वोच्च बलिदान के लिए हर भारतवासी ऋणी है।

डॉ. मुखर्जी जी की विद्वता और ज्ञान सम्पदा का लोहा उनके राजनीतिक विरोधी भी मानते थे। वह जानते थे कि उस समय की सरकार जिन विचारों और नीतियों पर चल रही थी उससे देश की समस्याओं का निराकरण सम्भव नहीं होगा। इसलिए उन्होंने राष्ट्रहित में सत्ता सुख को त्याग कर लंबे संघर्ष का जटिल मार्ग चुना। डॉ.मुखर्जी का मानना था कि एक राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य उसकी अपनी मूल संस्कृति और चिंतन की मजबूत नींव पर ही संभव है। इसीलिए उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण व वैकल्पिक राजनीतिक सोच देश के सामने रखी। उनके वही विचार आज देश को हर क्षेत्र में आगे ले जा रहे हैं।

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा कहते हैं कि एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगेयह केवल उद्घोष नहीं था, अपितु राष्ट्र की एकता के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का अडिग संकल्प था। आज जब यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अनुच्छेद-370 इतिहास बन चुका है, यह केवल संवैधानिक सुधार नहीं, अपितु डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान को एक सच्ची श्रद्धांजलि है।

डॉ. मुखर्जी जी का जीवन सत्ता नहीं, सिद्धांतों के लिए था। उनके विचार आज भी राष्ट्रवाद की सबसे शुद्धतम अभिव्यक्ति हैं।

निःसंदेह अखंड भारत के जिस संकल्प के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था, वह संकल्प प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज राष्ट्र के नवनिर्माण के साथ साकार हो रहा है। उनके प्रखर विचार, चिंतन एवं सर्वांगीण विकास के लिए मार्गदर्शन गौरवशाली भारत के निर्माण के आधार स्तंभ हैं।

लेखक - लखनऊ यूनिवर्सिटी में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष है.

निर्वासन में भी ज्योतिः दलाई लामा का जीवन, दर्शन व दिशा

प्रभा खाती

दलाई लामा केवल तिब्बत के आध्यात्मिक नेता ही नहीं, बल्कि करुणा, अहिंसा और सह-अस्तित्व के प्रतीक बन चुके हैं। उनका जीवन इतिहास की क्रूरताओं और मानवीय सहिष्णुता के बीच से निकला एक ऐसा प्रकाशपुंज है, जिसने दुनियाभर में शांति की नई परिभाषा गढ़ी। एक साधारण बालक से लेकर निर्वासित राष्ट्र के आध्यात्मिक मुखिया और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता तक की उनकी यात्रा संघर्षों, आत्म-नियंत्रण और अंतर्दृष्टि से भरी रही है। यह लेख उनके जीवन वृत्त, व्यक्तिगत संघर्षों और अंतरराष्ट्रीय पहचान पर गहराई से प्रकाश डालता है।

दलाई लामा का जन्म 6 जुलाई 1935 को तिब्बत के ताकस्तर गांव जो अब चीन के क्विंगहाई प्रांत में है, के एक कृषक परिवार में हुआ। उनका मूल नाम था ल्हामो थोंडुप। महज दो वर्ष की आयु में उन्हें 13वें दलाई लामा थुबतेन ग्यात्सो का पुनर्जन्म माना गया। तिब्बती बौद्ध परंपरा के अनुसार, दलाई लामा के पुनर्जन्म को विभिन्न धार्मिक संकेतों और खोज अभियानों के माध्यम से ढूंढ़ा जाता है।

1939 में उन्हें ल्हासा लाया गया और 1940 में वे आधिकारिक रूप से 14वें दलाई लामा के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उस समय तिब्बत एक स्वायत्त क्षेत्र के रूप में चीन और ब्रिटेन की राजनीति के बीच झूल रहा था। मात्र 15 वर्ष की आयु में, 1950 में, उन्हें तिब्बत का राजनीतिक मुखिया बना दिया गया, जब चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी तिब्बत में घुस आई और एक अधिग्रहण की स्थिति उत्पन्न हो गई।

1950 के दशक तिब्बत और दलाई लामा दोनों के लिए अत्यंत निर्णायक रहे। जब चीन ने तिब्बत पर पूरी तरह से नियंत्रण स्थापित करना शुरू किया, तब तिब्बतियों और चीनी सैनिकों के बीच तनाव बढ़ता गया। दलाई लामा ने कई बार चीन से शांतिपूर्ण बातचीत की कोशिश की, लेकिन उन्हें धोखा ही मिला।

1959 में ल्हासा में चीनी शासन के विरुद्ध जबरदस्त जनविद्रोह हुआ, जिसे चीन ने बेरहमी से कुचल दिया। इसी वर्ष दलाई लामा को भेस बदलकर अपने अनुयायियों के साथ हिमालय पार कर भारत आना पड़ा। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने न केवल उन्हें भारत में शरण दी, बल्कि धर्मशाला,हिमाचल प्रदेश में निर्वासित तिब्बती सरकार को स्थापित करने में भी सहायता की। यह निर्वासन महज भौगोलिक विस्थापन नहीं था, यह एक सभ्यता, संस्कृति और पूरे जीवन दर्शन के लिए अस्तित्व का प्रश्न था। दलाई लामा ने अपने निर्वासन को संघर्ष का रूप तो दिया, परंतु उसमें हिंसा नहीं आने दी।

भारत में निर्वासन के दौरान दलाई लामा ने न केवल तिब्बती प्रवासियों को संगठित किया, बल्कि तिब्बती संस्कृति, धर्म और भाषा को बचाए रखने के लिए भी व्यापक प्रयास किए। उन्होंने धर्मशाला को लिटिल ल्हासा के रूप में विकसित किया, जहाँ आज भी हजारों तिब्बती शरणार्थी रहते हैं और दुनिया भर से बौद्ध अनुयायी आते हैं। दलाई लामा ने 1963 में एक लोकतांत्रिक संविधान का मसौदा तैयार करवाया, जो निर्वासित तिब्बती प्रशासन की नींव बना। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी सारी राजनीतिक शक्तियाँ निर्वाचित प्रतिनिधियों को सौंप दीं, और 2011 में उन्होंने औपचारिक रूप से राजनीति से संन्यास की घोषणा की। इस कदम ने उन्हें एक विशुद्ध आध्यात्मिक नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया, जो केवल धर्म, करुणा और मानव कल्याण के विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दलाई लामा की विचारधारा मूलतः अहिंसा परमो धर्मः और करुणा पर आधारित है। वे महात्मा गांधी से गहराई से प्रभावित रहे और कई बार सार्वजनिक मंचों पर उन्हें अपना प्रेरणास्त्रोत बताया। उन्होंने मध्य मार्ग नीति की वकालत की, जो तिब्बत की पूर्ण स्वतंत्रता की बजाय चीन के भीतर वास्तविक स्वायत्तता की मांग करता है। उनका मानना है कि यदि हम दूसरों के लिए करुणा विकसित करें और उनके कष्टों को समझें, तो संसार से संघर्ष धीरे-धीरे समाप्त हो सकता है।

जाति प्रमाणपत्र में छिपा भेदभावः बच्चों के अधिकारों पर प्रशासनिक कुठाराघात

डॉ सत्यवान सौरभ

जाति प्रमाणपत्र जारी करने की प्रक्रिया में बच्चों के अधिकारों और सामाजिक पहचान की उपेक्षा गंभीर चिंता का विषय है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने हाल ही में स्पष्ट किया कि यदि कोई बच्चा अनुसूचित जाति की मां द्वारा पाला गया है और उसी समुदाय के रीति-रिवाजों में बड़ा हुआ है, तो उसे प्रमाणपत्र से वंचित नहीं किया जा सकता, भले ही पिता की जाति भिन्न हो। यह फैसला बच्चों के संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अब आवश्यक है कि राज्य सरकारें स्पष्ट नीति बनाकर प्रशासनिक भेदभाव की समाप्ति सुनिश्चित करें।

जाति प्रमाणपत्र एक ऐसा दस्तावेज है, जो हमारे समाज की सामाजिक संरचना और संवैधानिक वादों के बीच की गहरी खाई को उजागर करता है। यह केवल आरक्षण या सरकारी योजनाओं की पात्रता का प्रमाण नहीं, बल्कि इस बात का संकेत भी है कि किसी बच्चे को अपने अधिकार पाने के लिए किस प्रकार की सामाजिक स्वीकृति और सरकारी मान्यता की आवश्यकता है। हाल ही में दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसले में यह स्पष्ट किया कि अनुसूचित जाति से संबंधित किसी व्यक्ति का बच्चा भी उसी जाति से माना जाएगा, भले ही उसके माता-पिता के बीच धर्म अलग-अलग हों। यह फैसला उन हजारों बच्चों को राहत देता है, जिन्हें आज भी केवल उनके माता-पिता के धर्म या सामाजिक स्थिति के आधार पर जाति प्रमाणपत्र से वंचित किया जा रहा है।

दिल्ली उच्च न्यायालय का यह फैसला एक बहुचर्चित मामले में आया, जिसमें एक विधवा महिला ने अपने बेटे के लिए अनुसूचित जाति प्रमाणपत्र की मांग की थी। महिला दलित समुदाय से थी, जबकि उसके पति अन्य धर्म से संबंधित थे। बच्चे का पालन-पोषण दलित परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक परिवेश में हुआ, लेकिन प्रशासन ने प्रमाणपत्र जारी करने से इंकार कर दिया। तर्क था पिता की जाति अलग थी, अतः बच्चा उस जाति का नहीं माना जा सकता। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह दृष्टिकोण न केवल संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि बच्चों के विकास के अवसरों पर भी आघात है।

न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि ह्लजाति एक सामाजिक निर्माण है, जैविक नहीं। यदि बच्चा उस जाति के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में बड़ा हुआ है, तो उसे उस समुदाय का हिस्सा माना जाना चाहिए।ह्व यह टिप्पणी उन सरकारी अधिकारियों के सोच पर गहरी चोट है, जो जाति को अब भी 'खून से बंधा हुआ' तत्व मानते हैं, न कि सामाजिक परिस्थितियों से जुड़ा हुआ।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 15 और 16 समानता का अधिकार प्रदान करता है, वहीं अनुच्छेद 46 स्पष्ट रूप से अनुसूचित जातियों और जनजातियों की शैक्षिक और आर्थिक हितों की विशेष सुरक्षा की बात करता है। लेकिन जमीनी हकीकत इससे कोसों दूर है। सरकारी दफ्तरों में आज भी जाति प्रमाणपत्र एक 'कागजी पहचान' से ज्यादा एक 'पैदाइशी सबूत' के रूप में देखा जाता है। अधिकारी, विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, जाति प्रमाणपत्र जारी करने के लिए ऐसे दस्तावेज माँगते हैं जो एक साधारण नागरिक के पास हों भी तो उन्हें मान्यता नहीं मिलती – जैसे मौखिक घोषणाएं, स्थानीय पंचायत की सिफारिश, या जातिगत मान्यता पत्र।

समस्या की जड़ उस मानसिकता में है, जो मानती है कि जाति पिता से तय होती है, न कि सामाजिक पालन-पोषण और सामाजिक पहचान से। विशेषकर जब माता अनुसूचित जाति की हो और पिता अन्य जाति या धर्म का, तो बच्चे की पहचान को लेकर सरकारी तंत्र असहज हो जाता है। बच्चों को उन अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है, जिनके वे जन्मसिद्ध हकदार हैं – केवल इसलिए कि वे शुद्ध जाति व्यवस्था के साँचे में फिट नहीं होते।

यहाँ एक और प्रश्न उठता है- क्या जाति प्रमाणपत्र के मामले में 'पालन-पोषण' का महत्व नहीं होना चाहिए? क्या एक बच्चा जो दलित बस्ती में पला-बढ़ा, जिसने सामाजिक अपमान, भेदभाव और आर्थिक अभाव झेला, उसे केवल इस आधार पर वंचित किया जा सकता है कि उसके पिता किसी अन्य जाति या धर्म से थे? दिल्ली उच्च न्यायालय ने इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण अपनाया – कि जाति कोई आनुवंशिक रोग नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तराधिकार है।

प्रशासनिक व्यवस्था आज भी औपनिवेशिक सोच से ग्रस्त है, जहाँ हर दस्तावेज को संदेह की निगाह से देखा जाता है। बच्चे और विधवा महिलाओं के मामलों में तो यह और भी जटिल हो जाता है। एक विधवा दलित महिला को बार-बार प्रमाण देना पड़ता है कि उसका बच्चा उसी समुदाय में बड़ा हुआ है – यह न केवल मानसिक पीड़ा है, बल्कि असंवेदनशील राज्य व्यवस्था का प्रत्यक्ष उदाहरण भी है।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (ठउढउफ) भी कई बार यह सुझाव दे चुका है कि बच्चों को जाति प्रमाणपत्र जारी करने में पालन-पोषण को एक प्रमुख आधार बनाया जाए। लेकिन राज्य स्तर पर नौकरशाही अभी भी इस परिवर्तन के लिए तैयार नहीं है। अधिकारियों को डर है कि यदि सामाजिक पहचान को आधार मान लिया गया, तो फर्जी प्रमाणपत्रों की बाढ़ आ जाएगी। लेकिन यह सोच असल में उन बच्चों के अधिकारों का हनन करती है, जो दोहरे भेदभाव का शिकार होते हैं – एक ओर सामाजिक, दूसरी ओर प्रशासनिक।

जाति प्रमाणपत्र न केवल आरक्षण की कुंजी है, बल्कि यह सरकारी छात्रवृत्तियों, प्रतियोगी परीक्षाओं, आवासीय योजनाओं और नौकरियों में प्रवेश का द्वार भी है। जब किसी बच्चे को केवल उसके माता-पिता की जातिगत भिन्नता के आधार पर इससे वंचित किया जाता है, तो यह संविधान की आत्मा पर आघात है। यह उस समानता और न्याय की भावना के विपरीत है, जिसकी स्थापना के लिए संविधान निमार्ताओं ने संघर्ष किया था।

यह भी उल्लेखनीय है कि कई बार तो अधिकारियों द्वारा जाति प्रमाणपत्र देने से इनकार करने के पीछे व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या राजनैतिक दबाव भी होता है। यदि कोई बच्चा गरीब है, दलित बस्ती में रहता है और उसकी माँ अकेली कमाने वाली है- तब भी उसे प्रमाणपत्र नहीं दिया जाता, जब तक वह पिता की जाति सिद्ध न कर दे। यह पुरुषसत्तात्मक दृष्टिकोण है, जो महिला की सामाजिक स्थिति और उसके बच्चे के अधिकारों को नगण्य समझता है।

ऐसे में न्यायालयों की भूमिका निर्णायक हो जाती है। दिल्ली उच्च न्यायालय का यह फैसला एक नजीर बने, इसके लिए जरूरी है कि केंद्र और राज्य सरकारें स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करें। यदि कोई बच्चा किसी दलित महिला द्वारा पाला गया है, और समाज में उसकी पहचान उस समुदाय की है, तो उसे जाति प्रमाणपत्र देने में कोई संदेह या अड़चन नहीं होनी चाहिए। साथ ही, बाल अधिकारों के संरक्षण की दिशा में भी यह आवश्यक है कि शिक्षा विभाग, समाज कल्याण विभाग और बाल आयोग मिलकर ऐसी नीतियाँ बनाएँ, जहाँ बच्चों की सामाजिक पृष्ठभूमि को वरीयता दी जाए- न कि केवल जैविक वंशावली को।

यह केवल एक प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि संवैधानिक न्याय की ओर एक कदम है। यदि हम बच्चों को उनके अधिकारों से वंचित करेंगे, तो वह राष्ट्र जो न्याय, स्वतंत्रता और समानता की बात करता है, केवल एक छलावा बनकर रह जाएगा।

व्यंग्य

तलाश

विवेक रंजन श्रीवास्तव

आजकल अखबार पढ़ो या न्यूजफीड स्क्रॉल करो, ऐसा लगता है मानो दुनिया सेल्फी मोड में फंस गई है। हर कोई अपने आप में व्यस्त, दूसरों की बैटरी ड्रेन करने को तैयार दिखता है। ऐसे में समाज की हालत उस पुराने घर जैसी हो गई है जहां छत टपक रही है, नलों से रिश्तों का पानी लीक हो रहा है, और दीवारों पर नफरत के क्रैक्स उबर रहे हैं। ऐसे आत्मकेंद्रित परिवेश की मरम्मत के लिए विशेषज्ञों की तलाश है।

चश्मा ऐसा चाहिये कि हम स्वयं को देख तो सकें। लोगों की नजर इतनी कमजोर हो गई है कि वे मंदिर-मस्जिद तो देख लेते हैं, पर पड़ोस के भूखे बच्चे किसी को नजर नहीं आते। फोटो फि ल्टर इस तरह लगे हुये हैं कि दुनिया की हकीकत देख पाना मुश्किल हो गया है। ऐसे ऑप्टिशियन की जरूरत है जो जाति के चश्मे हटाकर इंसानियत का लेंस लगा सके, उसे स्वार्थ का फोकस एडजस्ट करना होगा, और घृणा के कॉन्टैक्ट लेंस को संवेदना से बदलना पड़ेगा। अगर चश्मो के नंबर सही हो जायें, तो शायद लोग आइनों में देखकर खुद से सवाल करने की ताकत जुटा सकें कि मैं कौन? सेल्फी लेने वाले तो हर मोबाईल हर हाथ में नजर आते हैं। बनावटी हंसी के साथ खींची गई तस्वीरों से सोशल मीडिया की डी पी भरी हुई हैं। ऐसे कुशल चित्रकार की आवश्यकता है जो कैनवास पर चेहरों से चुराई हुई हँसी फिर से मुस्कान के साथ बिना किसी फिल्टर के लौटा सके। ये सजीव चित्र लाइक्स के लिये नहीं मन की प्रसन्नता के लिये हों, मेकअप नहीं, मन से रंग भरे जायें। आंटी जी जो सजधज कर गार्डन में हंसी वाली रील बनाने में समय निकालती हैं, काश बच्चों में सच्ची-मुच्ची की हंसी बाँट सकें। युवाओं के चेहरे से टेंशन की लकीरें हटाकर उम्मीद की रंगत भरी जा सकें। सद्विचारों का पौधा लगाने वाले माली की चाहत है। घृणा के जंगल को काटकर विवेक के बीज बोए जायें। झूठ की खरपतवार उखाड़ फेंकने वाला गार्डनर चाहिये। सहिष्णुता के गमले में हास्य के फूल खिलें। खाद के नाम पर गोबर नहीं, थोड़े सद्गुण क्यारी में बिखेरे जावे।

स्कूलों में बच्चों को तो ए प्लस ग्रेड मिल जाता है, पर पापा-मम्मी इमोशनल इंटेलिजेंस में फेल हो रहे हैं। बच्चे नैतिकता में अनपढ़ रह गये हैं। ऐसे विशेषज्ञ शिक्षकों की वान्ट्स है जो व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी की डिग्री पर भरोसा न करें, गुगल की जानकारी पर नहीं यथार्थ ज्ञान के पाठ समाज को पढ़ा सके। ट्विटर ट्रेंड वार नहीं, खुली चर्चा से समस्यायओ के समाधान निकाले जायें। अच्छाई की राह पर जो जहाँ सोये दूसरे दिन वहां से कुछ आगे बढ़कर सोने के लिये गलतियों को डिलीट करके बेहतर बनने की आदतें सिखाने वालों की डिमांड है। ईगो का एसिड बेअसर कर, दिल का पीएच मेनटेन करने वाले जानकार अब जरूरी हो गये हैं। विज्ञान ने चाँद पर मिशन तो भेज दिया, पर इंसानों के बीच की दूरी नहीं घटा पाया। जिस वैज्ञानिक की तलाश है उसे संबंधो को ईगो के ब्लैक होल से निकालना होगा। दुनियां हर बहस मैं सही, तू गलत के ऑर्बिट में फंसी लगती है। वह मनोविज्ञानी चाहिये जो लोगों को मुंह से ही नही मन से सॉरी और कृपया जैसे शब्द निकालने वाला चमत्कार कर दिखाये। यदि यह मनोविज्ञान पक्ष विपक्ष के नेताओं पर भी काम कर जाए तो शायद सचमुच दुनियां ग्लोबल बन सके। हार्ट ट्रांसप्लांट तो बहुत सक्सेज हैं, माइंड चेंज करने वाले डॉक्टर चाहिये। स्टेथोस्कोप से नफरत की ट्यूमर सुनकर भी माफी की थेरेपी देना पड़ेगी झूठ की एलर्जी का टीका लगाना और संदेह के इन्फेक्शन को विश्वास के एंटीबायोटिक कोर्स से जड़ मूल से मिटाना होगा।

प्रश्न यह है कि ये विशेषज्ञ मिलेंगे कैसे? ये विशेषज्ञ हम सब में हमेशा से हैं। पर वे तब तक नहीं दिखेंगे, जब तक हम खुद इलेक्ट्रिशियन बनकर रिश्तों के तार नहीं जोड़ते, माली बनकर अच्छे विचार नहीं बोते, चित्रकार बनकर खुद कैनवास पर प्यार के रंग नहीं भरते। समाज की मरम्मत के लिये हममें से हर एक को अपना सुधार खुद करना होगा। रिपेयर के इस बिल को हमे स्वयं ही पास करना पड़ेगा।

(लेखक-सेवा निवृत मुख्य अभियंता (विद्युत मंडल), प्रतिष्ठित व्यंग्यकार , नाटक लेखक , समीक्षक, ई अभिव्यक्ति पोर्टल के संपादक , तकनीकी विषयों पर हिंदी लेखक, 20 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. 7000375798)

डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत के औद्योगीकरण के मुख्य वास्तुकार थे, उन्होंने आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी: एलजी सिन्हा

श्रीनगर, 06 जुलाई (दिव्य भारत ब्यूरो)। उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने आज श्रीनगर के टैगोर हॉल में डॉ.

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती समारोह में भाग लिया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, उपराज्यपाल ने आधुनिक भारत के प्रमुख निमार्ताओं में से एक के रूप में उनके अपार योगदान को याद किया।

उपराज्यपाल ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक दूरदर्शी राजनेता, शिक्षाविद् और निडर सांसद थे, जिनके आदर्श भारत के भाग्य को आकार देते रहे हैं। उनका गहन ज्ञान और सामाजिक सामंजस्य और सद्भाव के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता हमेशा याद रखी जाएगी।<

उपराज्यपाल ने कहा कि जम्मू-कश्मीर ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन और विरासत का सम्मान करने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने और जम्मू कश्मीर के उज्जवल भविष्य के लिए 'एक राष्ट्र, एक संविधान' की वकालत करने में उनकी भूमिका के लिए 2 साल का उत्सव अभियान शुरू किया है।

उपराज्यपाल ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत के साथ जम्मू-कश्मीर के एकीकरण के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। वह ह्यएक राष्ट्र, एक संविधानह्न के समर्थक थे और अनुच्छेद 370 का विरोध करते थे। जम्मू-कश्मीर के पूर्ण एकीकरण के लिए लड़ते हुए श्रीनगर में उनकी शहादत देश के इतिहास में निर्णायक

> ■ उपराज्यपाल श्रीनगर में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती समारोह में शामिल हुए
>
> ■ आधुनिक भारत के प्रमुख निमार्ताओं में से एक को श्रद्धांजलि दी

क्षण रही। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपने को उनकी शहादत के 66 साल बाद पूरा किया। आज, भारत एक मजबूत, एकजुट और विकसित भारत के निर्माण के उनके अन्य संकल्पों को प्राप्त करने के लिए अपनी विकास यात्रा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। उपराज्यपाल ने कहा कि अगस्त 2019 के बाद जम्मू-कश्मीर की उपलब्धियां डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपने और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संकल्प से प्रेरित हैं।

उपराज्यपाल ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भेदभाव मुक्त जम्मू-कश्मीर बनाने और भारत के साथ पूर्ण एकीकरण करके इसकी नियति बदलने के विजन से प्रेरित थे। उन्होंने विकास और राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में जम्मू कश्मीर के लोगों की सक्रिय भागीदारी की कामना की। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रेरणा और माननीय प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता से जम्मू कश्मीर विकास के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

उपराज्यपाल ने भारत के बौद्धिक, राजनीतिक, शैक्षिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रभाव पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत के औद्योगीकरण के मुख्य वास्तुकार थे। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी।

उपराज्यपाल ने संस्कृति, स्कूल और उच्च शिक्षा विभागों को जुलाई 2025 से जुलाई 2027 तक हर स्कूल, हर कॉलेज और हर विश्वविद्यालय में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन और कार्यों पर प्रदर्शनी और व्याख्यान आयोजित करने के लिए प्रेरित किया।

उपराज्यपाल ने कहा कि डॉ. मुखर्जी ने श्रीनगर में अंतिम सांस ली। पूरा जम्मू-कश्मीर उनका ऋणी है। नई पीढ़ी को उनकी विरासत का सम्मान करने में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों में सप्ताह भर की प्रदर्शनियां और उनके जीवन की यात्रा को दशार्ने वाले नाट्य प्रदर्शन आयोजित किए जाने चाहिए। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के स्मारकीय योगदान को भव्य स्मरणोत्सव कार्यक्रमों के माध्यम से हर गांव तक पहुंचाया जाना चाहिए।

उपराज्यपाल श्रीनगर के डाउनटाउन क्षेत्र बोटाकादल में यौम-ए-आशूरा के जुलजिनाह जुलूस में शामिल हुए

श्रीनगर, 06 जुलाई(दिव्य भारत ब्यूरो)। मुहर्रम के 10वें दिन यौम-ए-आशूरा के पवित्र अवसर पर, उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा आज श्रीनगर के डाउनटाउन क्षेत्र बोटाकादल में जुलजिनाह जुलूस में शामिल हुए।

उपराज्यपाल ने कहा, ह्यमैं हजरत इमाम हुसैन और उनके साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। शांति, प्रेम और करुणा के लिए उनका बलिदान हमें समानता और सद्भाव पर आधारित समाज बनाने का मार्गदर्शन करता है।

> ■ हजरत इमाम हुसैन और उनके साथियों को श्रद्धांजलि दी

हजरत इमाम हुसैन) ने निस्वार्थ सेवा का संदेश दिया और मानवता को उन लोगों की देखभाल करने का मार्गदर्शन दिया जो कम भाग्यशाली हैं।

युवा पीढ़ी को हजरत इमाम हुसैन के जीवन और गुणों से सीखना चाहिए और उनके द्वारा दिखाए गए नेक रास्ते पर चलना चाहिएह्न। उपराज्यपाल ने शोक मनाने वालों के बीच जलपान भी परोसा।

संक्षिप्त समाचार

पचीसवां महान गुरमत समागम गुरुद्वारा खारी धर्मशाला में संपन्न हुआ

पुंछ, 06 जुलाई(दिव्य भारत ब्यूरो)।25वां महान गुरमत समागम, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की कालजयी शिक्षाओं पर आधारित एक महीने की आध्यात्मिक यात्रा, पुंछ जिले के चक्कन दा बाग में जीरो लाइन के पास स्थित गुरुद्वारा यादगार संत भाई बहादुर सिंह जी डेहरी साहिब, धर्मसाल खारी में गहरी भक्ति और विनम्रता के साथ संपन्न हुई। विधायक हवेली, ऐजाज जान, उपायुक्त पुंछ, विकास कुंडल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, शफकत हुसैन, अतिरिक्त डीडीसी श्री पंकज मगोत्रा, लेफ्टिनेंट कर्नल मंदीप सिंह 10 बीडीजी, सीओ 6 मद्रास, सीओ बीआरओ / जीआरईएफ, तहसीलदार हवेली और रक्षा बलों के अन्य अधिकारी, जिनकी उपस्थिति सांप्रदायिक सद्भाव और साझा श्रद्धा का प्रतीक थी। समागम में श्री दरबार साहिब अमृतसर से आए धार्मिक उपदेशक सिंह साहिब ज्ञानी हरमित्र सिंह और हजूरी रागी भाई संदीप सिंह की पावन उपस्थिति रही, जिनके दिव्य कीर्तन ने वातावरण को आध्यात्मिक आनंद से भर दिया। स्थानीय रागियों और प्रचारकों के सहयोग से भाई संदीप सिंह द्वारा प्रस्तुत की गई मार्मिक कीर्तन से समागम गूंज उठा, जिन्होंने हृदय से गुरुमत के शाश्वत संदेशों को साझा किया। बच्चों के लिए 12 दिवसीय विशेष आध्यात्मिक शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें अगली पीढ़ी को नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराया गया। हाल ही में हुई गोलाबारी की घटनाओं में मारे गए निर्दोष लोगों की याद में एक विशेष अरदास (प्रार्थना) की गई, जिसमें दिवंगत आत्माओं की शांति और उनके परिवारों के लिए शक्ति की कामना की गई। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब, संगत, जिला प्रशासन, सेना अधिकारियों और सभी स्वयंसेवकों का हार्दिक आभार व्यक्त किया, जिनके अथक सहयोग से समागम की सफलता सुनिश्चित हुई।

राज्य दर्जे की बहाली को लेकर नेकां को केंद्र सरकार से उम्मीद

जम्मू, 6 जुलाई (हि.स.)। नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रांतीय अध्यक्ष एडवोकेट रतन लाल गुप्ता ने आशा व्यक्त की है कि मोदी सरकार आगामी संसद सत्र में जम्मू-कश्मीर के लिए राज्य दर्जे का विधेयक लाएगी। उन्होंने कहा कि लोगों को पूरी उम्मीद है कि केंद्र सरकार जल्द इस दिशा में ठोस कदम उठाएगी। यह बात उन्होंने उधमपुर जिले के जोन, जिला व ब्लॉक अध्यक्षों और अन्य पार्टी पदाधिकारियों की शेर-ए-कश्मीर भवन में आयोजित एकदिवसीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। रतन लाल गुप्ता ने कहा कि मौजूदा दोहरी सत्ता व्यवस्था ने केवल प्रशासनिक भ्रम और अव्यवस्था को जन्म दिया है, जिससे जनता की समस्याओं का समाधान अनावश्यक रूप से विलंबित हो रहा है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि राज्य का दर्जा बहाल होते ही उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली सरकार अपने घोषणापत्र के सभी वादों को त्वरित रूप से लागू करेगी। उन्होंने कहा कि हमारा रोडमैप समान विकास, जन अधिकारों की सुरक्षा और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण पर केंद्रित है, जिसे देर नहीं की जाएगी। सम्मेलन में जिला अध्यक्ष सुनील वर्मा और राम परशोतम शर्मा ने भी अपनी बात रखी। उन्होंने दावा किया कि पिछले दस वर्षों में भाजपा शासन के दौरान दूर-दराज के क्षेत्रों की घोर उपेक्षा हुई है। सड़कों की हालत दयनीय है, स्वास्थ्य केंद्रों और स्कूलों में कर्मचारियों की भारी कमी है। उन्होंने एनसी सरकार से डॉक्टरों और शिक्षकों के खाली पदों को शीघ्र भरने की मांग की। प्रांतीय सचिव शेख बशीर अहमद ने कहा कि उमर अब्दुल्ला सरकार उन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दे रही है, जिन्हें पहले नजरअंदाज किया गया था। उन्होंने आठ महीने में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा, विवाह सहायता राशि 50,000 रुपए से 75,000 रुपए तक बढ़ाना, एएवाई लाभार्थियों को 200 यूनिट मुफ्त बिजली, राशन 5 से 10 किलो तक और पेंशन में वृद्धि जैसे कई वादे पूरे किए गए हैं।

मुहर्रम 2025: उपायुक्त बांदीपोरा ने सुंबल में शोक जुलूस में भाग लिया

बांदीपोरा, 06 जुलाई(दिव्य भारत ब्यूरो)। डिप्टी कमिश्नर बांदीपोरा मंजूर अहमद कादरी ने रविवार को जिले के सुंबल उप-मंडल में विभिन्न गांवों से शोक मनाने वालों द्वारा निकाले गए मुहर्रम जुलूस में भाग लिया। यह जुलूस इमाम हुसैन (आरए) की शहादत की याद में निकाला गया था। इस अवसर पर, डीसी ने शोक मनाने वालों के बीच जलपान और पेयजल वितरित किया। सभी विचारधाराओं के लोग जुलूस में शामिल हुए और शोक मनाने वालों को जलपान और पानी पिलाया, जिससे सांप्रदायिक और सांप्रदायिक सद्भाव और भाईचारे पर प्रकाश डाला गया। यह उल्लेख करना उचित है कि जिला प्रशासन ने एकता और शांति की भावना को बढ़ाते हुए और जुलूसों के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कीं। डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन शांति और व्यवस्था बनाए रखने और मुहर्रम के पालन के सुचारू संचालन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर काम कर रहा है।

रामबन के चंद्रकोट में धार्मिक मान्यताओं के साथ आशूरा जुलूस निकाला गया

रामबन, 6 जुलाई (दिव्य भारत ब्यूरो)। यौम-ए-आशूरा का पवित्र अवसर रामबन के चंद्रकोट में गहरी

धार्मिक श्रद्धा और शांति के साथ मनाया गया, जहां सैकड़ों शोक मनाने वालों ने हजरत इमाम हुसैन (एएस) और उनके साथियों के सर्वोच्च बलिदान की याद में पारंपरिक जुलजिना जुलूस में भाग लिया।

यह जुलूस अंजुमन-ए-इमामिया के संरक्षण में इमामबाड़ा अली नगर कुंफर चंद्रकोट से शुरू हुआ, जो चंद्रकोट के मुख्य बाजार से गुजरा और प्रतीकात्मक कर्बला में समाप्त हुआ।

धार्मिक विद्वानों ने इमाम बारगाह में सभा को संबोधित किया और 1400 साल से भी पहले कर्बला में इमाम हुसैन (एएस) और उनके 72 साथियों की शहादत के ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला।

सत्य, न्याय और धार्मिकता के लिए उनके अटूट रुख के लिए शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई - ऐसे मूल्य जो पीढ़ियों को प्रेरित करते रहते हैं और इस्लाम के मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हैं।

डिप्टी कमिश्नर मोहम्मद अलयास खान के नेतृत्व में जिला प्रशासन रामबन ने चिनाब घाटी के शिया बहुल क्षेत्र चंद्रकोट में सुरक्षा, चिकित्सा सहायता, जलापूर्ति, बिजली और सफाई के लिए व्यापक व्यवस्था करके जुलूस के सुचारू और शांतिपूर्ण संचालन को सुनिश्चित किया।

इस अवसर पर डीसी रामबन मोहम्मद अलयास खान, एसएसपी कुलबीर सिंह, एसीआर शौकत हयात मट्टू, सीएमओ डॉ. कमल जे जादु डीएसपी (मुख्यालय) ओम प्रकाश के साथ-साथ स्वास्थ्य विभाग की टीमें, एंबुलेंस और अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद थे।

रामबन के विधायक एडवोकेट अर्जुन सिंह राजू और कई गणमान्य नागरिकों ने भी एकजुटता व्यक्त करते हुए और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जुलूस में भाग लिया।

जिला विकास परिषद कुलगाम के अध्यक्ष ने शाहू सचान का दौरा किया, 10वें मुहर्रम जुलूस में भाग लिया

कुलगाम, 06 जुलाई(दिव्य भारत ब्यूरो)। जिला विकास परिषद कुलगाम के अध्यक्ष एम अफजल पर्रे ने आज शाहू सचान कुलगाम का दौरा किया और 10वें मुहर्रम के अवसर पर आयोजित जुलूस में भाग लिया, जो मुस्लिम समुदाय के लिए स्मरण का एक महत्वपूर्ण दिन है। उनकी उपस्थिति ने इस पवित्र अवसर के दौरान एकता को बढ़ावा देने और समुदाय का समर्थन करने के लिए प्रशासन की प्रतिबद्धता को उजागर किया। यात्रा के दौरान, डीडीसी अध्यक्ष ने स्थानीय निवासियों, धार्मिक नेताओं और मुहर्रम जुलूस के प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और यह सुनिश्चित किया कि शांतिपूर्ण और सम्मानजनक पालन के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। उन्होंने संबंधित विभागों को शोक मनाने वालों की सुविधा के लिए जुलूस मार्गों पर सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवा और स्वच्छता सहित आवश्यक सेवाएं प्रदान करने का निर्देश दिया। इस अवसर पर, डीडीसी अध्यक्ष ने स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों और स्वैच्छिक संगठनों के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर का भी दौरा किया। मुहर्रम के दौरान त्याग और करुणा की भावना को दशार्ते इस शिविर में समुदाय की सक्रिय भागीदारी देखी गई। अध्यक्ष ने दानदाताओं की मानवीय भावना की प्रशंसा की और इस बात पर जोर दिया कि ऐसे प्रयास मुहर्रम के सार को दशार्ते हैं और सांप्रदायिक सद्भाव को मजबूत करते हैं।

बडगाम में गहन धार्मिक महत्व के साथ 10वें मुहर्रम का जुलूस निकाला गया

बडगाम, 06 जुलाई (दिव्य भारत ब्यूरो)। बडगाम में आज 10वें मुहर्रम

(आशूरा) का जुलूस गहन धार्मिक श्रद्धा और गंभीरता के साथ निकाला गया। मुख्य जुलजाना शरीफ जुलूस सुबह-सुबह मीरगुंड के बाब-उल-इलेम इमामबाड़ा से शुरू हुआ और देर शाम दार-उल-मुस्तफा, बडगाम में समाप्त हुआ।

बडगाम के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) डॉ. बिलाल मोहिउद्दीन भट ने एसएसपी बडगाम निखिल बोरकर के साथ मीरगुंड से जुलूस में सक्रिय रूप से भाग लिया।

उनके साथ निदेशक स्वास्थ्य सेवा कश्मीर, एडीसी बडगाम, सीपीओ बडगाम, सीएमओ बडगाम और अन्य संबंधित जिला अधिकारी भी थे।

सम्मान और एकजुटता के प्रतीक के रूप में, डीसी और एसएसपी बडगाम ने भी अलम उठाया और ताजिया जुलूस के साथ-साथ चले।

उन्होंने व्यक्तिगत रूप से विभिन्न बिंदुओं पर शोक मनाने वालों को पानी और जलपान परोसने में भाग लिया, जिसमें बेहिश्ते जहरा पार्क बडगाम के बाहर स्थापित जिला प्रशासन का जलपान स्टाल भी शामिल था।

जिला प्रशासन ने पूरे जिले में आशूरा के जुलूसों के सुचारू रूप से पालन के लिए व्यापक व्यवस्था की थी। सभी प्रमुख स्थानों पर चिकित्सा शिविर, जल वितरण स्टाल, स्वच्छता सेवाएं और पुलिस की तैनाती सुनिश्चित की गई थी।

डीसी, जो लगातार जमीन पर व्यवस्थाओं की निगरानी और समीक्षा कर रहे थे, ने दिन के महत्व को दोहराया और कहा, ह्य10 वें मुहर्रम के महत्व को याद रखें और यह हमें त्याग, धैर्य और सच्चाई के लिए खड़े होने का संदेश देता हैह्न।

उन्होंने बडगाम में आशूरा की पवित्रता और सुचारू संचालन को बनाए रखने में उनके समन्वय और समर्थन के लिए सभी विभागों, स्वयंसेवकों और स्थानीय समुदाय का आभार व्यक्त किया।

अमरनाथ यात्रा: 7,200 तीर्थयात्रियों का एक और जत्था जम्मू से रवाना

जम्मू, 6 जून (हि.स.)। लगातार बारिश के बीच, 7,200 से अधिक तीर्थयात्रियों का एक नया जत्था रविवार को तड़के दक्षिण कश्मीर हिमालय में अमरनाथ मंदिर के लिए यहां आधार शिविर से रवाना हुआ। 3 जुलाई को शुरू हुई 38 दिवसीय वार्षिक तीर्थयात्रा ने रविवार को 50,000 का आंकड़ा पार कर लिया।अधिकारियों ने बताया कि 1,587 महिलाओं और 30 बच्चों सहित 7,208 तीर्थयात्रियों का पांचवां जत्था कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सुबह 3:35 बजे से 4:15 बजे के बीच भगवती नगर आधार शिविर से दो अलग-अलग काफिलों में रवाना हुआ। 2 जुलाई के बाद से यह तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा जत्था था, जब उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने यहां से यात्रा को हरी झंडी दिखाई थी। इसके साथ ही कुल 31,736 तीर्थयात्री जम्मू आधार शिविर से घाटी के लिए रवाना हो चुके हैं। अधिकारियों ने बताया कि 147 वाहनों में 3,199 तीर्थयात्रियों को लेकर पहला काफिला गंदरबल जिले में छोटे लेकिन 14 किलोमीटर लंबे बालटाल मार्ग के लिए रवाना हुआ, जिसके बाद 160 वाहनों में 4,009 तीर्थयात्रियों का दूसरा काफिला अनंतनाग जिले में 48 किलोमीटर लंबे पारंपरिक पहलगाम मार्ग से यात्रा पर निकला। तीर्थयात्रियों ने रातभर जम्मू के बड़े हिस्सों में हुई भारी बारिश का सामना किया।अधिकारियों के मुताबिक 3 जुलाई को यात्रा शुरू होने के बाद से अब तक 50,000 से अधिक तीर्थयात्री 3,880 मीटर ऊंचे अमरनाथ गुफा मंदिर के दर्शन कर चुके हैं।

बर्मिंघम में इंग्लैंड को 336 रनों से रौंदा, आकाशदीप को मिले 10 विकेट, गिल ने बनाए कुल 430 रन

एजबेस्टन टेस्ट में भारतीय टीम ने रच दिया इतिहास... इंग्लैंड को उसी के घर में दी मात

● बर्मिंघम (एजेंसी)

भारत और इंग्लैंड के बीच 2025 की एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट में भारत ने बर्मिंघम के एजबेस्टन मैदान पर शानदार जीत हासिल की। इस जीत के साथ ही भारत ने 336 रनों से इंग्लैंड को मात दी और पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली।

इंग्लैंड को 608 रनों का लक्ष्य मिला था, लेकिन उनकी पूरी टीम पांचवें दिन के दूसरे सत्र में 271 रनों पर ऑलआउट हो गई। इंग्लैंड की दूसरी पारी में आकाशदीप ने 6 विकेट चटकाए। शुभमन गिल के नेतृत्व में यह भारत की पहली जीत रही। गिल ने इस मैच में 269 और 161 रन बनाए। भारत ने 58 साल बाद एजबेस्टन में अपनी पहली जीत दर्ज की।

5 मैचों की सीरीज में 1-1 की बराबरी, अब तीसरा टेस्ट 10 से लॉर्ड्स में

शुभमन गिल
पहली पारी 269 रन
दूसरी पारी 161 रन

आकाशदीप

पहली पारी 4 विकेट
दूसरी पारी 6 विकेट

अब सीरीज का तीसरा टेस्ट 10 जुलाई से लॉर्ड्स में खेला जाएगा। भारतीय टीम ने अपनी दूसरी पारी 427/6 के स्कोर पर घोषित की थी। पहले पारी में भारत ने 587 रन बनाए थे, जबकि इंग्लैंड की पहली पारी 407 रन पर समाप्त हुई थी। पहली पारी के आधार पर भारत को 180 रनों की बढ़त मिली थी।

विदेश में रनों के हिसाब से भारत की सबसे बड़ी जीत

भारत ने पहली बार एजबेस्टन में टेस्ट जीत हासिल की है। इससे पहले यहां खेले गए 8 टेस्ट मैचों में से भारत को 7 में हार और 1 में ड्रॉ का सामना करना पड़ा था। भारत ने अपना पहला टेस्ट जुलाई 1967 में एजबेस्टन में खेला था, जिसमें उसे 132 रनों से हार मिली थी। अब, 58 साल बाद भारत ने इस मैदान पर जीत हासिल की है। विदेश में यह भारत की रनों के हिसाब से सबसे बड़ी टेस्ट जीत रही। इससे पहले, 2019 में भारत ने एंटीगा में वेस्टइंडीज को 318 रनों से हराया था।

ऐसी रही इंग्लैंड की दूसरी पारी

इंग्लैंड को विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए शुरुआत में ही झटके लगे और उसने 50 रनों तक 3 विकेट गंवा दिए। जैक क्राउली (0) को मोहम्मद सिराज ने आउट किया। वहीं, बेन डकेट (25) और जो रूट (6) को आकाशदीप ने चलता किया। हालांकि, ओली पोप और हैरी ब्रूक ने चौथे दिन के खेल में इंग्लैंड को कोई और नुकसान नहीं होने दिया। पांचवें दिन जब बारिश के बाद खेल शुरू हुआ, तो आकाशदीप ने भारत को सफलता दिलाई। उन्होंने ओली पोप (24 रन) को बोल्ड किया और फिर हैरी ब्रूक (23 रन) को आउट कर दिया। बेन स्टोक्स (33 रन) और जेमी स्मिथ (88 रन) ने छठे विकेट के लिए 70 रनों की साझेदारी की, लेकिन वाशिंगटन सुंदर ने लंच से पहले स्टोक्स को आउट किया। लंच के बाद, प्रसिद्ध कृष्णा ने क्रिस वोक्स (7) को आउट किया और आकाशदीप ने जेमी स्मिथ को आउट कर 5 विकेट की हैट्रिक पूरी की। आकाशदीप ने मैच में कुल 10 विकेट झटके, जिनमें से 5 विकेट उन्होंने पहली पारी में भी लिए। जोश टंग (2) को रवींद्र जडेजा ने आउट किया और अंत में ब्रायडन कार्स (38) को आउट कर आकाशदीप ने भारत को जीत दिलाई।

आकाश दीप हुए भावुक

कैंसर से जूझ रही बहन को समर्पित की ऐतिहासिक जीत

टीम इंडिया की ऐतिहासिक जीत के बाद आकाश दीप भावुक नजर आए। उन्होंने इस जीत को अपनी बहन को समर्पित किया, जो पिछले दो महीने से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रही हैं। आकाश दीप ने कहा कि जब भी उन्होंने मैच के दौरान गेंद पकड़ी, तो उनकी बहन का चेहरा उनके जेहन में आ जाता था। उन्होंने बताया कि उनकी बहन की हालत अब स्थिर है। आकाश दीप ने चेतेश्वर पुजारा से बातचीत में कहा, यह बात मैंने किसी को बताई नहीं थी। मेरी बड़ी बहन पिछले दो महीनों से कैंसर से जूझ रही है। अब उसकी हालत स्थिर है और वह ठीक है। जिस दौर से वो गुजर रही है, मुझे लगता है कि वह मेरा प्रदर्शन देखकर सबसे ज्यादा खुश होगी।

आकाश दीप ने रचा इतिहास

आकाश दीप इंग्लैंड में एक टेस्ट मैच में 10 विकेट लेने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बन गए हैं। इससे पहले चेतन शर्मा ने 1986 में एजबेस्टन में ही यह उपलब्धि हासिल की थी। अब इंग्लैंड में किसी टेस्ट मैच में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी करने का रिकॉर्ड आकाश दीप के नाम हो चुका है।

इंग्लैंड में भारतीय गेंदबाजों के बेस्ट आंकड़े (टेस्ट मैचों में)

10/187	आकाश दीप	बर्मिंघम 2025
10/188	चेतन शर्मा	बर्मिंघम 1986
9/110	जसप्रीत बुमराह	ट्रेंट ब्रिज 2021
9/134	जहीर खान	ट्रेंट ब्रिज 2007

विदेश में भारत की सबसे बड़ी जीत (रनों के हिसाब से...)

336	रन बनाम इंग्लैंड	बर्मिंघम 2025
318	रन बनाम वेस्टइंडीज	नॉर्थ साउंड 2019
304	रन बनाम श्रीलंका	गॉल 2017
295	रन बनाम ऑस्ट्रेलिया	पर्थ 2024
279	रन बनाम इंग्लैंड	लीड्स 1986

जोकोविच ने लगाया जीत का शतक

● लंदन / (एजेंसी)

नोवाक जोकोविच विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के इतिहास में 100 जीत दर्ज करने वाले दुनिया के तीसरे खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने तीसरे दौर में सर्बिया के हम वतन खिलाड़ी मिओमिर केकमानोविच पर 6-3, 6-0, 6-4 से जीत के साथ यह उपलब्धि हासिल की।

उनसे पहले मार्टिना नवरातिलोवा और रोजर फेडरर इस मुकाम पर पहुंचे थे। जोकोविच ने अपने 24 ग्रैंड स्लैम खिताबों में से सात ऑल इंग्लैंड क्लब में जीते हैं। उन्होंने शनिवार को केकमानोविच के खिलाफ सेंटर कोर्ट पर पहले सेट में 3-3 के स्कोर से लगातार नौ गेम जीतकर आसानी से अगले दौर में प्रवेश किया। जोकोविच ने कोर्ट पर दिए साक्षात्कार में कहा, ''मैं अपने पसंदीदा टूर्नामेंट में जो भी इतिहास बनाऊंगा, उसके लिए मैं आभारी हूं।

विंबलडन में 100 जीत दर्ज करने वाले तीसरे खिलाड़ी बने

अगला मुकाबला मिनाउर से होगा

अपना 20वां विंबलडन टूर्नामेंट खेल रहे 38 वर्षीय जोकोविच का अगला मुकाबला 11वें नंबर के एलेक्स डी मिनाउर से होगा। महिला वर्ग में नौ बार विंबलडन एकल चैंपियन रहीं नवरातिलोवा ने 120 एकल जबकि पुरुष वर्ग में आठ बार के चैंपियन फेडरर ने 105 एकल मैच में जीत दर्ज कीं।

कार्लसन ने फिर दिखाया अपना दम

● जागरेब / (एजेंसी)

भारत के वर्तमान विश्व शतरंज चैम्पियन डी गुकेश के लिए ग्रांड चैस टूर के सुपरयूनाइटेड रैपिड में एकतरफा जीत के बाद भी शतरंज के सबसे फटाफट फॉर्मेट ब्लिट्ज का रास्ता आसान नहीं माना जा रहा था और हुआ भी कुछ ऐसा ही,कल खेले गए सुपरयूनाइटेड ब्लिट्ज शतरंज के पहले दिन एक और जहां गुकेश जीत को भी तरस गए वहीं विश्व के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी नॉर्वे के मैगनस कार्लसन नें बेहद शानदार खेल दिखाते हुए अपराजित रहते हुए एकल बढ़त कायम कर ली है।

गुकेश जो रैपिड में सिर्फ एक बार हारे थे ब्लिट्ज में कई अच्छी बाजियां समय की कमी के चलते हारते चले गए और उन्होंने एकमात्र जीत फबियानों करूआना के खिलाफ दर्ज की और एक ड्रॉ नीदरलैंड के अनीश गिरि के खिलाफ खेला वहीं मैगनस कार्लसन नें गुकेश को इस बार पराजित करते हुए रैपिड में अपनी हार का हिसाब बराबर कर दिया। ब्लिट्ज का पहला दिन कार्लसन के नाम रहा और उन्होंने छह जीत और 3 ड्रॉ के साथ 7.5 अंक बनाए।

साक्षी ने विश्व मुक्केबाजी कप में जीता स्वर्ण पदक

महिलाओं के 54 किग्रा में शानदार प्रदर्शन

● अस्ताना / (एजेंसी)

दो बार की युवा विश्व चैंपियन साक्षी ने रविवार को यहां दूसरे विश्व मुक्केबाजी कप में महिलाओं के 54 किग्रा फाइनल में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। 24 साल की साक्षी ने आक्रामक खेल का प्रदर्शन किया और अमेरिका की योसलाइन पेरेज के खिलाफ सर्वसम्मत फैसले से जीत दर्ज की। भारतीय दल ने यहां विश्व मुक्केबाजी कप में अच्छा प्रदर्शन किया है और कुल 11 पदक पक्के किए हैं। भारत ने ब्राजील में पहले चरण में एक स्वर्ण और एक रजत सहित छह पदक जीते थे। पहले सत्र में चार भारतीय मुक्केबाजों ने हिस्सा लिया और साक्षी ने गति और सटीक पंच के संयोजन के साथ शानदार प्रदर्शन करते हुए पोडियम पर शीर्ष स्थान हासिल किया।

पूजा रानी को रजत

मीनाक्षी ने 48 किग्रा वर्ग के फाइनल में स्थानीय नाजिम काइजाइबे को कड़ी चुनौती दी लेकिन 2-3 के खंडित फैसले से हार गयी। जुगनू (पुरुष 85 किग्रा) और पूजा रानी (महिला 80 किग्रा) को भी फाइनल में हारने के बाद रजत पदक से संतोष करना पड़ा। जुगनू को कजाकिस्तान के बेकजाद नूरदौलेटोव के खिलाफ 0-5 से हार का सामना करना पड़ा जबकि पूजा को आस्ट्रेलिया की एसिटा फ्लिंट के खिलाफ इसी अंतर से शिकस्त मिली।

चेबेट ने 5000 मीटर दौड़ में बनाया विश्व रिकॉर्ड

● यूजीन / (एजेंसी)

कीनिया की बीट्राइस चेबेट ने प्रीफॉन्टेन क्लासिक एथलेटिक्स प्रतियोगिता में महिलाओं की 5,000 मीटर दौड़ 13 मिनट 58.06 सेकंड में जीतकर विश्व रिकार्ड बनाया। चेबेट इस स्पर्धा में 14 मिनट से कम समय निकालने वाली पहली महिला एथलीट बन गई है। उन्होंने इथियोपिया की गुडाफ त्सेगे द्वारा बनाए गए 14:00.21 के पिछले रिकॉर्ड को पीछे छोड़ा। त्सेगे ने 2023 प्रीफोंटेन क्लासिक में यह रिकॉर्ड बनाया था। कीनिया की ही फेथ किपयेगोन ने महिलाओं की 1,500 मीटर दौड़ तीन मिनट 48.68 सेकंड में पूरी कर विश्व रिकॉर्ड बनाया। इस स्पर्धा में तीन बार की ओलंपिक चैंपियन किपयेगोन ने 3:49.04 के अपने ही रिकॉर्ड में सुधार किया जो उन्होंने पिछले साल जुलाई में पेरिस ओलंपिक खेलों के दौरान बनाया था।

14 मिनट से कम समय निकालने वाली महिला एथलीट बनीं

डीपीएल | पूर्व दिग्गज वीरेंद्र सहवाग के लिए खुशी और गम दोनों, छोटे बेटे वेदांत रहे अनसोल्ड

सहवाग के बेटे आर्यवीर 8 लाख रुपए में बिके

● नई दिल्ली / (एजेंसी)

दिल्ली प्रीमियर लीग से एक बड़ी खबर सामने आई है। इस लीग में 2025 के ऑक्शन में दिग्गज भारतीय ओपनर वीरेंद्र सहवाग के दोनों बेटे भी उतरे थे।

सहवाग के बड़े बेटे आर्यवीर सहवाग को मोटी रकम में खरीद लिया गया है। वहीं उनके छोटे बेटे वेदांत को लीग के ऑक्शन में किसी भी फ्रेंचाइजी ने नहीं खरीदा है। आर्यवीर को सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने 8 लाख रुपये में खरीदा। दोनों बेटे दिल्ली के लिए जूनियर क्रिकेट खेल चुके हैं। छोटे बेटे वेदांत सहवाग को कोई खरीदार नहीं मिला। सिमरजीत सिंह डीपीएल 2025 की नीलामी में

सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। उन्हें सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने 39 लाख रुपये में खरीदा। नीतीश राणा वेस्ट दिल्ली लायंस के लिए खेलेंगे। उन्हें 34 लाख रुपये में खरीदा गया। इशांत शर्मा भी वेस्ट दिल्ली लायंस के लिए 13 लाख रुपये में खेलेंगे।

छोटे बेटे वेदांत का नाम पहले आया

नीलामी में पहले वेदांत का नाम आया। किसी भी टीम ने उनमें दिलचस्पी नहीं दिखाई। इसलिए वह नहीं बिके। कुछ मिनट बाद आर्यवीर का नाम आया। उन्हें खरीदने के लिए टीमों में होड़ लग गई। आखिर में सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने उन्हें 8 लाख रुपये में खरीद लिया। आर्यवीर दिल्ली के लिए -19 क्रिकेट खेलते हैं। वह अपनी बल्लेबाजी के कारण अक्सर चर्चा में रहते हैं। 2024 में वह दिल्ली राज्य टीम के लिए 300 रन बनाने के करीब पहुंच गए थे। दिल्ली के लिए पारी की शुरुआत करते हुए आर्यवीर ने मेघालय के खिलाफ 297 रन बनाए थे।

फरारी जीतने से चूके थे आर्यवीर

आर्यवीर एक बार फरारी जीतने से चूक गए। वह अपने पिता के टेस्ट में सबसे ज्यादा रन 319 के रिकॉर्ड को नहीं तोड़ पाए। सहवाग ने 2015 में कहा था, हां, मेरे बच्चों को पता है कि मैंने टेस्ट क्रिकेट में कुछ बड़े स्कोर बनाए हैं। इसलिए मैंने उनसे कहा है कि अगर तुम स्कूल क्रिकेट में भी 319 रन का आंकड़ा पार करते हो, तो मैं तुम्हें फरारी दूंगा। आर्यवीर के तिहरा शतक बनाने से चूकने के बाद सहवाग ने ट्विटर पर पोस्ट किया, बहुत अच्छा खेले आर्यवीर लेकिन 23 रनों से फरारी चूक गए।

संक्षिप्त समाचार

प्रयागराज में माफिया अतीक के साढ़ू समेत छह के खिलाफ मुकदमा दर्ज

प्रयागराज,06 जुलाई (हि.स.)। नगर के करैली थाने में माफिया अतीक के साढ़ू समेत छह लोगों के खिलाफ शनिवार रात मुकदमा दर्ज किया गया है। एक महिला की तहरीर पर दर्ज मुकदमे की पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। अपर पुलिस उपायुक्त नगर अभिजीत कुमार ने रविवार को बताया कि करैली के जेके नगर निवासी अंजुम आरा की तहरीर पर बीती रात माफिया अतीक अहमद के साढ़ू इमरान जेई और उनके भाई जीशान उर्फ जानू सहित छह लोगों के खिलाफ करैली थाने में एक और मुकदमा दर्ज किया गया। एडीसीपी ने बताया कि महिला ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है कि इमरान और उसके भाई ने एक जमीन उसको बेचीं थी उसकी रजिस्ट्री उस जमीन की न होकर दूसरी आर.आ.जी. की थी। धोखाधड़ी के इस मामले की करैली थाना पुलिस जांच कर रही है।

सरकारी विद्यालयों के मर्जर के खिलाफ राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

लखनऊ,06 जुलाई (हि.स.)। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ बेसिक शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश के कम नामांकन वाले परिषदीय विद्यालयों का अन्य विद्यालयों में युग्मन (मर्जर) के खिलाफ है। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का कहना है कि विद्यालयों के मर्जर से विद्यालय बच्चों की पहुंच से दूर हो जायेंगे। इससे शिक्षा के अधिकार अधिनियम का अस्तित्व भी समाप्त हो जायेगा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधान का भी उल्लंघन है। महासंघ ने कम छात्र संख्या वाले विद्यालयों का विलय करने के आदेश पर तत्काल रोक लगाने की मांग की है। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष अजीत सिंह ने हिन्दुस्थान समाचार से रविवार को कहा कि बेसिक शिक्षा के विद्यालयों में कम नामांकन का एक प्रमुख कारण इन विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव, शिक्षकों की कमी से शिक्षा की गुणवत्ता का प्रभावित होना है। अजीत सिंह ने बताया कि प्राथमिक विद्यालयों में कम नामांकन का एक प्रमुख कारण प्रवेश की न्यूनतम आयु छह वर्ष का होना है, क्योंकि आंगनबाड़ी केन्द्रों पर प्री प्राइमरी कक्षाओं का संचालन व्यावहारिक रूप से सफल नहीं है। पांच वर्ष की आयु पूर्ण कर बच्चे का प्रवेश प्राथमिक विद्यालयों में न होने से प्राइवेट विद्यालय आसानी से इन बच्चों का प्रवेश अपने यहां कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि आज का बच्चा ही देश का भावी नागरिक है। इसलिए विद्यालयों को बंद करने के स्थान पर बेसिक शिक्षा में सुधार किये जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने सरकार से मांग की है कि प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में पर्याप्त कक्षा कक्ष और जूनियर विद्यालय में तीन कक्षा कक्ष के साथ पृथक-पृथक पुस्तकालय, स्मार्ट क्लास रूम, लैब, भण्डार गृह, किचन एवं भोजनालय, खेल का मैदान हो। प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक, स्थायी प्रधानाध्यापक, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी व तकनीकी शिक्षा के लिए पृथक से विषय विशेषज्ञ शिक्षक एवं एक क्लर्क व एक अनुचर की नियुक्ति अनिवार्य रूप से की जाए, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए सुलभ हो सके।

ताजिया के दौरान हाई टेंशन लाइन की चपेट में आये चार युवक एक की मृत्यु, एक की हालत गंभीर

राहुल शर्मा/दिव्य भारत अलीगढ। रविवार को नीबरी से निकलकर करबला जा रहे ताजिया में मची अफरा तफरी जानकारी अनुसार ताजिया नीबरी से निकलकर करबला जा रहे थे जिसमें चार युवक नीबरी निवासी अरमान 21 पुत्र अनवार, नानू, आरिफ पुत्र जैनुद्दीन व फैजान चारों युवक बांस में लगी करीब 20 फीट की हाथ के पंजे वाली छड़ी को पकड़े थे, नीबरी मोड़ पर अचानक छड़ी हाई टेंशन लाइन को छू गयी, जिसमें चारों युवक बिजली की चपेट में आ गये। आरिफ व नानू घर चले गये एवं फैजान को गंभीर हालत में जीवन ज्योति अस्पताल में भर्ती कराया, तथा अरमान को मेडिकल ले गये, जहां अरमान की मृत्यु हो गयी। अरमान के परिवारीजन शव को बिना पोस्टमार्डम कराये घर ले आये मृतक चार भाई व दो बहिन में सबसे बड़ा था।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नारे को मोदी सरकार ने किया साकार: अभिलाषा गुप्ता

प्रयागराज,06 जुलाई (हि.स.)। महान देशभक्त श्रद्धेय श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नारे ₹एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेगा₹, से प्रेरित होकर 5 अगस्त 2019 को मोदी सरकार ने अनुच्छेद 370 को हटाकर जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बना दिया है। यह बात रविवार को भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज चौक मण्डल में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता ने कहा। उन्होंने कहा कि डॉ. मुखर्जी जी के आदर्श, मूल्य व सिद्धांत हम सभी के लिए मार्गदर्शक व प्रेरणादायी हैं। इससे पूर्व प्रयागराज की पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता नन्दी ने भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज चौक मण्डल में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर दीप प्रज्जवल किया। इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष संजय गुप्ता, महानगर उपाध्यक्ष अनिल केसरवानी झल्लर, मंडल अध्यक्ष सुमित वैश्य, पार्षद नीरज टंडन व ओमप्रकाश द्विवेदी, कार्यक्रम संयोजक अवधेश श्रीवास्तव एवं मण्डल पदाधिकारी , सेक्टर संयोजक, बूथ अध्यक्ष, कार्यकर्ता आदि लोग उपस्थित रहे।

बीमार बेटे को देखने आई वृद्धा को डॉक्टर की कार ने रौंदा, मौत

झांसी, 6 जुलाई (हि.स.)। नवाबाद थाना क्षेत्र स्थित मेडिकल कॉलेज कैंपस में रविवार दोपहर को डॉक्टर की कार ने एक बुजुर्ग महिला को बेरहमी से कुचल दिया। घटना में वृद्ध महिला की मौके पर ही मौत हो गई। कार को डॉक्टर का साला चला रहा था। उसे कम सुनाई देता है। लोग चिल्लाते रहे, मगर उसे सुनाई ही नहीं दिया और एक वृद्धा की जान चली गई। बताया जा रहा है कि महिला अपने बीमार बेटे को देखने आई थी। यहां वो अपनी बहू के साथ पेड़ के नीचे परिजनों के आने का इंतजार कर रही थी। तभी कार ने कुचल दिया। हादसे में बहू बाल-बाल बच गई। पुलिस ने कार जब्त करके शव कब्जे में ले लिया। अब पुलिस मामले की जांच कर रही है। लल्लाबाई (70) पुत्र स्वामी प्रसाद दांगी टीकमगढ़ के नदनवारा गांव की रहने वाली थी। मृतका के बेटे अचल दांगी ने बताया कि उसका छोटा भाई हरचरण झांसी में सूतीमिल के पास रहता है। उनको हार्ट अटैक आया था। इस वजह से निजी हॉस्पिटल में ऑपरेशन हुआ था। भाई को देखने के लिए आज वह , मां, पत्नी लाड़कुंवर गांव के जितेंद्र के साथ झांसी आये थे। जितेंद्र को भी डॉक्टर को दिखाना था। इसलिए जितेंद्र ने मां और पत्नी को मेडिकल कॉलेज में गेट नंबर-1 के पास पेड़ के नीचे बैठा दिया और इलाज कराने चला गया। लाड़कुंवर ने बताया कि वह अपनी सास के साथ सड़क से करीब 10 फीट दूर पेड़ के नीचे बैठी थी। थोड़ी दूरी पर एक कार खड़ी थी। ड्राइवर और उसके साथ वालों ने खाना खाया। इसके बाद जाने के लिए कार में सवार हो गए।ड्राइवर ने अचानक से कार मोड़ दी और सास लल्लाबाई को कुचल दिया। आगे का पहिया सास के ऊपर चढ़ गया और वो नीचे दब गई। उसे भी कार टच करती हुई निकल गई। लोग चिल्लाए भी, लेकिन ड्राइवर ने नहीं सुनी। उसे कम सुनाई देता है। जैसे तैसे लोगों ने कार रुकवाई। सास को नीचे से निकाला और इमरजेंसी ले गए। वहां उनको मृत घोषित कर दिया गया। कार मालिक डॉक्टर भी दिखाने आए थे अचल ने बताया कि कार महोबा में पशु चिकित्सालय में तैनात डॉक्टर की है। जिसे उनका साला नरेंद्र चला रहा था। डॉक्टर भी साथ थे। वे किसी को दिखाने के लिए झांसी आए थे। लल्लाबाई की मौत के बाद घर में मातम का माहौल है। इनका है कहना इस मामले में मेडिकल चौकी प्रभारी अनुज कुमार ने बताया कि कार को जब्त कर लिया है। पंचनामा भरकर शव का पोस्टमॉर्टम करवाया जा रहा है। पूरे मामले की जांच की जा रही है।

तालाब में नहाते समय डूबने से दो बच्चों की मौत

सिद्धार्थनगर, 06 जुलाई (हि. स)। जनपद के डुमरियागंज थाना क्षेत्र के माली मैनहा गांव के उत्तर तालाब में नहाने गए दो बच्चों की डूबने से मौत हो गई। मेला देखने के बहाने ये बच्चे अपने घर से गये हुए थे। पंचायतनामा करके शव को पुलिस ने परिजनों को सौंप दिया है। नगर पंचायत डुमरियागंज के माली मैनहा गांव के वार्ड नं एक गौतमबुद्धनगर के सात वर्षीय प्रिंस पुत्र शंकर प्रसाद व वार्ड नं 17 मोदीनगर के दस वर्षीय सूफियान पुत्र असगर अली घर से मोहर्रम का मेला देखने के लिए निकले थे। दोनों बच्चे गांव के उत्तर बब्बन के तालाब के पास पहुंचकर अचानक अपना कपड़ा व चप्पल उतारकर तालाब में नहाने लगे। इसमें पानी गहरा था। जिससे वे गहरे पानी में डूबने लगे। बच्चों को डूबता देख दूर सीवान में दूर बकरी चरा रही एक युवती ने जोर से चिल्लाकर शोर मचाया। युवती की आवाज सुनकर गांव के लोग जब तक आते तब तक दोनों की मौत हो चुकी थी। काफी मशक्कत के बाद स्थानीय लोगों ने शव को तालाब से ढूढ़ कर बाहर निकाला। मौके पर पहुंचे नायब तहसीलदार विष्णु प्रसाद सिंह ने बताया कि परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया।

भारत की एकता और अखंडता के लिए समर्पित रहा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन: सीएम योगी

लखनऊ, (दिव्य भारत ब्यूरो)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हे याद किया। इस दौरान सीएम योगी ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को हुआ था। उन्होंने मात्र 33 वर्ष की उम्र में कोलकाता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वह एक प्रखर वक्ता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और महान शिक्षाविद थे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी का पूरा जीवन राष्ट्र माता के लिए समर्पित किया था। बंगाल के अकाल के दौरान उनकी सेवाएं पूरा देश स्मरण करता है। उनका जीवन भारत की एकता और अखंडता के लिए समर्पित रहा। डॉ. मुखर्जी ने आजादी के बाद पंडित नेहरू के नेतृत्व में बनी पहली सरकार में भारत के खाद्य एवं उद्योग मंत्री के रूप में देश में खाद्य की आत्मनिर्भरता और औद्योगीकरण की नींव रखी थी, जो नए भारत में भी स्पष्ट देखने को मिलता है। उन्होंने नेहरू सरकार के तुष्टीकरण के नीति के विरोध में मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया था। इतना ही नहीं भारतीय जन संघ का गठन और उसके पहले अध्यक्ष होने के साथ जब भारत के संविधान में नेहरू सरकार ने कश्मीर को 370 धारा के माध्यम से अलग स्टेटस देने का प्रयास किया और परमिट सिस्टम जम्मू कश्मीर के लिए लागू किया, उसके खिलाफ सबसे पहले डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने ही आवाज उठायी थी।

उन्होंने उस समय एक देश में दो प्रधान, दो विधान और दो निशान नहीं चलेंगे का नारा दिया था। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी के इन सपनों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साकार किया।

सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर में धारा 370 को समाप्त करके कश्मीर को भारत के संविधान के अनुरूप शेष भारत के साथ जोड़ते हुए एक विधान एक प्रधान और एक निशान के साथ भारत के लोकतांत्रिक की धारा के साथ जोड़ने का अभिनव प्रयास किया है। आज जम्मू कश्मीर तेजी के साथ विकास कर रहा है, जो डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के संकल्पों की विजय है। यह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में संभव हो पाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व

में भारत दुनिया भर में इन्वेस्टमेंट के बेहतरीन डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित हुआ है। उन्होंने कहा कि औद्योगीकरण की नींव को आजाद भारत में डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने प्रारंभ किया था और आज उसका एक बहुत ही वृहद स्वरूप देश में देखने को मिल रहा है।

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर किया माल्यार्पण
- बोले, डॉ.मुखर्जी ने 33 वर्ष की उम्र में कोलकाता विवि के सबसे युवा कुलपति के रूप में दी अपनी सेवाएं
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डॉ. मुखर्जी के सपनों को किया साकार, कश्मीर में धारा 370 को किया समाप्त

इस सदी की सबसे बड़ी महामारी के दौरान जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, उस दौरान भारत ने अपने यहां 80 करोड़ लोगों को फ्री में राशन की सुविधा का लाभ दिया, जो आज भी निरंतर चल रहा है। यह सभी संकल्प डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों को साकार करने वाला है। इस अवसर पर राज्यसभा सदस्य डॉ.दिनेश शर्मा, मेयर सुषमा खर्कवाल, भाजपा नेता नीरज सिंह आदि उपस्थित थे।

किसान गोद ले सकेंगे 1 से 4 गोवंश, बनेंगे कैटल शेड और लगेंगी स्मॉल बायोगैस यूनिटें

लखनऊ, (दिव्य भारत ब्यूरो)। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की नई मिसाल कायम करने के उद्देश्य से योगी सरकार एक अभिनव योजना की शुरूआत करने जा रही है। अब राज्य के किसान गोवंश को गोद ले सकेंगे। इस पहल से न केवल गोवंश का संरक्षण होगा, बल्कि गो आधारित अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के अंतर्गत किसानों को एक से चार तक गोवंश सौंपे जाएंगे, जिनके माध्यम से किसान आत्मनिर्भर बनेंगे।

इस योजना के तहत जिन किसानों को गोवंश मिलेगा, उनके आवासीय परिसर में ही मनरेगा के अंतर्गत व्यक्तिगत कैटल शेड बनाए जाएंगे। इससे किसानों को अपने पशुओं के रख-रखाव के लिए अलग से स्थान उपलब्ध होगा, जिससे स्वास्थ्य और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जा सकेगा। वहीं, स्मॉल बायोगैस यूनिट भी लगाई जाएंगी।

गो सेवा के जरिए सीएम योगी की इस नई पहल से बड़े पैमाने पर स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ होगा। साथ ही प्रदेश की इकोनॉमी भी रफ्तार पकड़ेगी। उत्तर प्रदेश गो सेवा आयोग के ओएसडी डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि इस योजना का पूरा खाका तैयार कर लिया गया है। जल्द ही महिला स्वयं सहायता समूहों और नवयुवकों को विशेष तौर पर इस अभियान में शामिल किया जाएगा। जिससे उनके स्वावलंबन को नई दिशा मिलेगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की इस पहल में ऊर्जा संरक्षण को भी जोड़ा गया है। हर गोवंश पालक को छोटी लघु बायोगैस इकाइयां उपलब्ध कराई जाएंगी, ताकि गोबर से स्वच्छ ईंधन तैयार किया जा सके। यह किसानों के रसोई ईंधन की जरूरत को भी पूरा करेगा और पर्यावरण संरक्षण में सहायक होगा।

मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के माध्यम से ग्रामीणों, विशेषकर महिला स्वयं सहायता समूहों और नवयुवकों को गो सेवा से जोड़ा जाएगा। इससे उन्हें न केवल रोजगार मिलेगा, बल्कि आय का स्थायी स्रोत भी उपलब्ध होगा। इस

- मनरेगा के तहत आवासीय परिसर में ही बनाए जाएंगे व्यक्तिगत कैटल शेड
- लघु बायोगैस इकाइयां भी की जाएंगी स्थापित
- मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के अंतर्गत ग्रामीणों को बनाया जाएगा आत्मनिर्भर

योजना से ग्राम स्तर पर ऊर्जा और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा।यह योजना सामाजिक सहभागिता, स्वरोजगार और ग्राम्य विकास का समन्वित मॉडल है। इसके अंतर्गत गो आधारित जैविक खेती, गोबर से खाद और ईंधन तैयार कर ग्रामीणों को आर्थिक मजबूती दी जाएगी।

इस योजना को एकीकृत ग्रामीण विकास मॉडल के रूप में लागू किया जा रहा है, जिसमें गोवंश संरक्षण, जैविक खेती, ऊर्जा उत्पादन और सामाजिक स्वावलंबन जैसे पहलुओं को समाहित किया गया है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिलेगी और गांवों में सतत विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। इस योजना के अंतर्गत परंपरा और तकनीक का समावेश कर ग्रामीण विकास को नया आयाम देने की कोशिश की जा रही है।

देवशयनी एकादशी पर बांके बिहारी के चरणों में आस्था का जनसैलाब

मथुरा, 06 जुलाई(हि.स.)। देवशयनी एकादशी पर वृंदावन की परिक्रमा लगाने और ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। वहीं उमस भरी गर्मी में श्रद्धालुओं की हालत खराब हो गई। रविवार को सुबह से

वृंदावन आने वाले श्रद्धालुओं के कदम तेजी के साथ बढ़ते नजर आए। सूर्य की किरण चढ़ने के साथ ही श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि देखने को मिली। वजह थी कि रविवार को देव शयनी एकादशी पड़ने के कारण दिल्ली, एनसीआर समेत अन्य प्रांतों के श्रद्धालुओं के साथ ग्रामीण अंचलों के श्रद्धालु भी ठाकुर बांके बिहारीजी के दर्शन को मंदिर पहुंचे थे।

दर्शन करने से पहले श्रद्धालुओं ने परिक्रमा लगाई। परिक्रमार्थियों के बीच चार पहिया वाहन भी चल रहे थे, जिससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़े। अटल्ला चुंगी चौराहा, रमणरेती पुलिस चौकी चौराहा के पास जाम की स्थिति बनी देखी गई।

परिक्रमा लगाने के बाद श्रद्धालु बांके बिहारी मंदिर पहुंचे। यहां मंदिर के बाहर व्यवस्था संभाले पुलिसकर्मियों ने श्रद्धालुओं को बैरियर पर रोकना शुरू कर दिया। पीछे से श्रद्धालुओं की भीड़ लगातार बढ़ रही थी। ऐसे में वैरिंगर से पहले भीड़ के दबाव और उमस ने श्रद्धालुओं की हालत खराब कर दी। फिर भी आस्था के आगे वह घचराए नहीं और दर्शन करके ही लौटे।

कावड़ियों को पेयजल की होगी समुचित व्यवस्था-कावड़ मार्ग पर नगर निगम लगवाएगा पेयजल शिविर

राहुल शर्मा/ दिव्य भारत अलीगढ़। खेरेश्वर धाम और कावड़ यात्रा के रूट पर स्ट्रीट लाइट की होगी बेहतर व्यवस्था आगामी कावड़ यात्रा के मार्ग पर नगर निगम संबंधी व्यवस्थाओ का नगर आयुक्त प्रेम प्रकाश मीणा ने शाम को अधीनस्थों के साथ जायजा लिया। नगर आयुक्त ने रामघाट रोड किशनपुर क्वारसी किशनपुर तिराहा मीनाक्षी पुल जीटी रोड खेरेश्वर मंदिर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त ने सड़क के किनारे रखे बिल्डिंग मटेरियल को अगले दो दिनों हटवाये जाने के निर्देश दिए साथ ही साथ क्वार्सी नाले की सफाई का काम तेजी से पूर्ण करने के निर्देश दिए। नगर आयुक्त ने बताया अलीगढ़ नगर निगम का प्रयास कावड़ यात्रा की मार्ग पर व्यवस्थाओ को पूर्ण करने का रहेगा। कावड़ यात्रा के रूट का निरीक्षण अधीनस्थों के साथ किया गया है, रामघाट रोड किशनपुर सहित कई मार्गों पर गड्ढा मुक्ति का अभियान नगर निगम द्वारा ट्रैफिक को दृष्टिगत रखते हुए रात में चलाया जा रहा है। नगर आयुक्त ने बताया कावड़ यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं और कावड़ियों को पेयजल की समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराने के उद्देश्य से, नगर निगम द्वारा कावड़ यात्रा के रूट पर जगह-जगह पेयजल शिविर बनाए जाएंगे, साथ ही साथ खेरेश्वर धाम और उनके साथ पेयजल पथ प्रकाश साफ सफाई की अलग-अलग टीम तैनात की गई है। सावन के पहले सोमवार से पूर्व खेरेश्वर धाम पर

और कावड़ यात्रा के रूट पर स्ट्रीट लाइट की बेहतर व्यवस्था करने का प्रयास नगर निगम का रहेगा। कावंड़ यात्रा की व्यवस्था का विवरण अलीगढ़ नगर निगम कावड़ यात्रा को कुशल संपन्न करने के लिए पूर्ण रूप से पप्रयासरत है कांवरियों के आवागमन की मार्ग पर सभी व्यवस्थाओं को सावन के पहले सोमवार से पूर्व पूर्ण कर लिया जाएगा। कावड़ यात्रा को संपन्न करने के लिए नगर निगम द्वारा 5 सेक्टर बनाए गए हैं प्रत्येक सेक्टर में एक वरिष्ठ अधिकारी की तैनाती की गई है परंपरागत मोबाइल टॉयलेट पानी के टैंकर स्ट्रीट लाइट को दुरुस्त करने के निर्देश अधीनस्थों को दे दिए गए हैं नगर आयुक्त ने कहा कावड़ यात्रा को सकुशल और व्यवस्थित तरीके से बेहतर इंतजामों के साथ संपन्न करने के लिए नगर निगम पूर्ण रूप से प्रयासरत है, नगर निगम के अधिकारी और कर्मचारी पूरी शिद्दत के साथ कावड़ यात्रा के मार्ग को व्यवस्थित करने में लगे हुए हैं, निरीक्षण में नगर आयुक्त के साथ अपर नगर आयुक्त राकेश कुमार यादव मुख्य अभियंता सुरेश चंद साथ थे।

श्रावण मास की तैयारियां तेज: काशी विश्वनाथ धाम में सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध

वाराणसी। श्रावण मास को लेकर रविवार को श्री काशी विश्वनाथ धाम स्थित सभागार (बोर्ड रूम) में वाराणसी मंडल के आयुक्त एस. राजलिंगम की अध्यक्षता में एक समन्वय बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का उद्देश्य धाम में कार्यरत सभी संबंधित पक्षों – दुकानदारों, सुरक्षा व सफाई एजेंसियों, गेस्ट हाउस, जलपान केंद्रों एवं अन्य सेवा प्रदाताओं – की समस्याओं को सुनना और उनके समाधान हेतु ठोस दिशा-निर्देश देना रहा।बैठक में स्टेकहोल्डर्स ने प्रमुख पर्वों – जैसे रंगभरी एकादशी, महाशिवरात्रि आदि के दौरान होने वाली भारी भीड़, यातायात में आने वाली कठिनाइयों और श्रद्धालुओं की दुकानों तक सीमित पहुँच जैसी चुनौतियों को प्रमुखता से उठाया। इन बिंदुओं को गंभीरता से लेते हुए आयुक्त ने संबंधित अधिकारियों को त्वरित और समन्वित कार्रवाई के निर्देश दिए। पूजा थाली उपलब्ध कराने वाले वेंडर्स ने बताया कि मात्र रुपए 65 की थाली में पर्याप्त पूजन सामग्री देना संभव नहीं, जिससे श्रद्धालुओं में असंतोष उत्पन्न होता है। वहीं शास्त्रियों ने बताया कि एक रुद्राभिषेक अनुष्ठान पर उन्हें मात्र रुपए 150 पारिश्रमिक मिलता है, जो 2014 से अब तक अपरिवर्तित है। इस पर आयुक्त ने मंदिर प्रशासन को 11 वर्षों में हुई महंगाई और आजीविका लागत में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए एक यथोचित प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश दिया।

बैठक में दिसंबर 2024 की बोर्ड बैठक में पारित ₹प्लास्टिक मुक्त धाम₹ प्रस्ताव की प्रगति की समीक्षा की गई। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने जानकारी दी कि सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रभावी रोक लगाई जा चुकी है, हालांकि श्रद्धालु दूध और फूल-मालाएं अभी भी प्लास्टिक पात्रों में लेकर आते हैं। यह निर्णय लिया गया कि आज से सिंगल यूज प्लास्टिक पॉलीथिन आदि का धाम में प्रवेश पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती पर माल्यार्पण और वृक्षारोपण

धर्मेन्द्र श्रीवास्तव/दिव्य भारत प्रतापगढ़। भारतीय जनसंघ के संस्थापक और प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा विभिन्न मंडलों पर गोष्ठियों और सेवा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. मुखर्जी के जीवन दर्शन और राष्ट्रहित में उनके योगदान को याद करते हुये कार्यक्रम की शुरूआत चिलबिला चौराहे स्थित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई। माल्यार्पण कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव और सदर विधायक राजेंद्र मौर्य ने संयुक्त रूप से भाग लिया। इन दोनों नेताओं ने डॉ. मुखर्जी के विचारों को नमन करते हुए उन्हें भारतीय राष्ट्रवाद का सच्चा प्रहरी बताया। वहीं माल्यार्पण कार्यक्रम में कई वरिष्ठ नेता,कार्यकर्ता भी शामिल हुये। सभी ने एक स्वर में डॉ. मुखर्जी के बलिदान को

प्रेरणादायक बताते हुए उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। जयंती के अवसर पर भाजपा ने ह्लएक पेड़ मां के नामह्व अभियान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम भी चलाया। सभी मंडलों पर भाजपा कार्यकताओं ने अपने-अपने माताओं के नाम पर पौधे रोपे और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। यह कार्यक्रम न केवल पर्यावरणीय चेतना का परिचायक बना बल्कि संस्कार और सेवा की भावना को भी जागृत करता दिखाई दिया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित विचार गोष्ठियों का आयोजन सभी मंडलों पर किया गया, जिसमें उनके राजनीतिक जीवन, राष्ट्रवाद, जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर उनके संघर्ष और बलिदान पर विस्तृत चर्चा हुई।

गोवर्धन मुड़िया पूर्णिमा मेले में मथुरा जंक्शन पर उमड़ी भीड़

मथुरा, 06 जुलाई(हि.स.)। गोवर्धन में पांच दिवसीय मुड़िया पूर्णिमा मेला प्रारंभ होते ही मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन पर रविवार को भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़े। पूरे जंक्शन पर हर तरफ सिर्फ श्रद्धालु ही नजर आ रहे है। श्रद्धालु (यात्रियों) के बैठने को भी जगह नहीं मिल रही थी तो वहीं ट्रेनें भी खचाचक भरी हुई आ रही थीं। उतरने और चढ़ने वाली सवारियों को काफी जद्दोजहद करनी पड़ रही थी। ट्रेनों में चढ़ने को लेकर मारपीट भी हो गई। हालांकि जंक्शन पर मौजूद जीआरपी तथा भारत एवं स्काउट गाइडस ने तुरंत बीच बचाव कराया। उसके बावजूद भी सवारियों में ट्रेन में चढ़ने और उतरने को लेकर धक्का मुक्की होती रही।

बाबू जगजीवन राम की पुण्य तिथि पर कांग्रेसियों ने किया उन्हें श्रद्धा पूर्वक नमन

राहुल शर्मा/दिव्य भारत अलीगढ़। पूर्व उप प्रधानमन्त्री स्व.बाबू जगजीवन राम की पुण्यतिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी। इस अवसर पर हरियाणा प्रदेश कांग्रेस के पूर्व प्रभारी विवेक बंसल(पूर्व विधायक)के कार्यालय अयोध्या कुटी मैरिस रोड पर आयोजित किए गए कार्यक्रम में विवेक बंसल ने कांग्रेसीजनों के साथ बाबू जगजीवन राम के चित्र पर माल्यार्पण करके उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया। इस अवसर पर विवेक बंसल ने उनको अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि बाबूजी वास्तव में दलित समाज के बहुत बड़े हितेषी थे, इतना ही नहीं दलितों के उत्थान के लिए उन्होंने सदैव समाज को प्रेरित किया। इतना ही नहीं केंद्र सरकार में रक्षामंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर कार्य करते हुए अपनी उल्लेखनीय सेवायें दी और उनकी सेवाओं के लिए उन्हें सदैव सम्मानपूर्वक याद किया जायेगा।

हिमालय की पहाड़ियों में बसा देश भूटान प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक समृद्धि और पर्यावरणीय जागरूकता का अनोखा संगम है, जो खुशहाली और आत्मिक शांति का प्रतीक माना जाता है।

भूटान खुशहाली और संस्कृति का अनुपम संगम

भूटान, हिमालय की गोद में बसा एक छोटा सा देश, अपनी अनूठी विशेषताओं के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह ऐसा राष्ट्र है, जो कभी किसी साम्राज्य का गुलाम नहीं रहा और अपनी स्वतंत्रता को गर्व के साथ संजोए हुए है। भूटान की पहचान न केवल इसके प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक धरोहर से है, बल्कि इसकी अनोखी जीवनशैली और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता से भी है। यह देश दुनिया का एकमात्र कार्बन-नकारात्मक राष्ट्र है, जो उत्सर्जित कार्बन से अधिक अवशोषित करता है। भूटान की राजधानी थिंपू और अन्य क्षेत्रों में ट्रैफिक सिग्नल नहीं हैं।

सांस्कृतिक और प्राकृतिक वैभव

भूटान का सांस्कृतिक परिदृश्य बौद्ध धर्म से गहराई से प्रभावित है। नौवीं शताब्दी में पद्मसंभव, जिन्हें गुरु रिंपोछे के नाम से जाना जाता है, ने बौद्ध धर्म को भूटान में प्रतिस्थापित किया। किंवदंती के अनुसार, वे एक बाघिन पर सवार होकर तक्तसांग (टाइगर नेस्ट) मठ पहुंचे, जहां उन्होंने तीन वर्ष, तीन माह, तीन सप्ताह और तीन दिन तक ध्यान किया। यह मठ आज भी पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है, जहां तक पहुंचने के लिए 5 से 9 घंटे की चुनौतीपूर्ण ट्रेकिंग करनी पड़ती है। इस यात्रा में प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक शांति का अनूठा अनुभव प्राप्त होता है। इसके अलावा, चेरी मठ और अन्य बौद्ध मठ भी भूटान की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। परंपरागत रूप से, भूटानी परिवार अपने एक पुत्र को लामा बनने के लिए मठ भेजते थे, और ननों के लिए आश्रम भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

यात्रा और आतिथ्य

भारतीय पर्यटकों के लिए भूटान की यात्रा करना अत्यंत सुगम है, क्योंकि यहां वीजा या पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन एक परमिट लेना अनिवार्य होता है। लेकिन इस परमिट में निश्चित क्षेत्रों का भ्रमण किय जा सकता है और एक निर्धारित समयावधि तक यह परमिट सीमित होता है। भूटान में भारतीय रुपये से लेन-देन मान्य हैं किंतु छोटे नोट ही चलन में हैं। यहां बड़े नोट पांच सौ नहीं लिए जाते हैं, अधिक राशि के लिए एक्सचेंज करना होता है। यहां की यात्रा सड़क मार्ग से आसानी से की जा सकती है। पारो, जहां भूटान का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा स्थित है, यहां से थिंपू की यात्रा के दौरान ताचोग ल्हाखांग पुल जैसे ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह 15वीं शताब्दी में निर्मित लोहे की जंजीरों वाला निलंबन पुल पाछू नदी के किनारों को जोड़ता है। रास्ते में स्थानीय महिलाओं द्वारा संचालित दुकानों में सब्जियां, मसाले और चीज जैसे उत्पाद मिलते हैं।

प्रकृति और पर्यावरण के प्रति समर्पण

भूटान का पर्यावरणीय दृष्टिकोण इसे विश्व में अद्वितीय बनाता है। यह देश अपनी 'सकल राष्ट्रीय खुशहाली' नीति के लिए जाना जाता है, जो नागरिकों की भलाई, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक परंपराओं को प्राथमिकता देती है। यहां प्रदूषण लगभग नगण्य है और देश की हरियाली इसे कार्बन-नकारात्मक बनाती है। भूटानवासियों को मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं, जो इसकी खुशहाली को और बढ़ाती हैं।

भूटान दुनिया का पहला देश है जहां 2004 में तंबाकू की खुलेआम बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया गया।

जीवनशैली और भोजन

भूटानी जीवनशैली सादगी और संयम पर आधारित है। बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण यहां पशु हत्या नहीं की जाती और मांस मुख्यत: भारत से आयात किया जाता है। भोजन में लाल चावल, नूडल्स, सूप, सब्जियां और चीज प्रमुख हैं। थिंपू में एकमात्र ट्रैफिक पुलिसकर्मी शालीनता से यातायात नियंत्रित करता है।

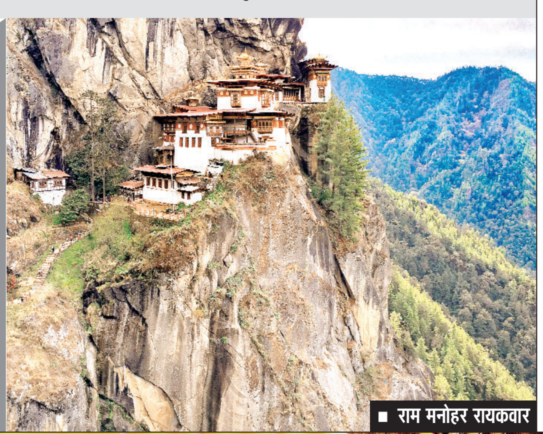

■ राम मनोहर रायकवार

चीन में बढ़ी बैंबू रैट्स की डिमांड

मोटे चूहों की खेती बना करोड़ों का कारोबार

मुर्गी, बकरी या मछली की खेती तो आपने सुनी होगी, लेकिन क्या आपने कभी चूहों की खेती के बारे में सोचा है? वो भी ऐसे चूहे, जिनका वजन 2-3 किलो तक होता है और जिनका मांस हेल्दी ग्रीन मीट के नाम से बिकता है। चीन में बैंबू रैट्स की खेती तेजी से बढ़ रही है। ये चूहे न सिर्फ वहां थाली का हिस्सा बन चुके हैं, बल्कि कमाई का जरिया भी बन गए हैं। आइए जानते हैं इस दिलचस्प और चौंकाने वाले ट्रेंड के पीछे की पूरी कहानी।

▪ रोजगार का नया जरिया

आम चूहों से आकार में बड़े और वजन में भारी ये बैंबू रैट्स अब ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का नया जरिया बनते जा रहे हैं। जहां पारंपरिक पशुपालन में अधिक लागत और संसाधनों की जरूरत होती है, वहीं ये चूहे कम खर्च में बड़ा मुनाफा दिला रहे हैं।

क्यों मची है धूम?

कम खर्च, ज्यादा मुनाफा

बैंबू रैट्स को पालना बेहद आसान है। इन्हें खिलाने के लिए बांस, शकरकंद, मक्का जैसे सस्ते और आसानी से मिलने वाले खाद्य पदार्थ दिए जाते हैं।

मांसाहारियों की पहली पसंद

इनका मांस चीन में खासा लोकप्रिय है। इसे स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, यहां तक कि कई जगहों पर इसे हेल्दी ग्रीन मीट का दर्जा मिला हुआ है।

बिजनेस के नए स्रोत

एक चूहा साल में तीन बार 4-5 बच्चों को जन्म देता है। यानी कुछ ही महीनों में 100 से बढ़कर 500 हो सकते हैं। यही वजह है कि ये कारोबार इतनी तेजी से फैल रहा है।

कैसे होती है परवरिश?

इन चूहों को छोटे-छोटे पिंजरों में रखा जाता है और इन्हें मिट्टी के बिलों जैसी जगहों पर रहना पसंद होता है। दिनभर वे बांस कुतरते रहते हैं और अपना वजन तेजी से बढ़ाते हैं। इनकी देखभाल इतनी आसान है कि कई किसान इसे सेट एंड फॉरगेट मॉडल की तरह मानते हैं।

कितनी है कमाई?

एक बैंबू रैट का बाजार मूल्य 6000 रुपए तक हो सकता है। यदि कोई किसान 100 से अधिक चूहे पालता है, तो वह सालभर में 10 से 15 लाख रुपए तक की कमाई कर सकता है। यही कारण है कि इस लाभदायक चूहा खेती को लेकर युवाओं में जबरदस्त क्रेज और उत्साह देखने को मिल रहा है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

हर जगह बढ़ी मांग

चीन के कई रेस्तरां और होटलों में अब बांबू रैट्स की डिश खास मेन्यू का हिस्सा बन चुकी हैं। स्वाद में अनोखा और शरीर के लिए ताकतवर, ये चूहे अब मांसाहारियों के बीच एक नया ट्रेंड बनते जा रहे हैं।

भारत आएगा ट्रेंड?

फिलहाल भारत में चूहों को लेकर ऐसी कल्पना करना भी अजीब लगेगा, लेकिन कम लागत और ज्यादा मुनाफे का यह मॉडल निश्चित ही कई देशों के लिए एक सोचने का विषय बन सकता है। बहरहाल यही कहा जा सकता है कि जहां एक तरफ दुनिया में चूहों को मार भगाने की जद्दोजहद है, वहीं चीन में इन्हीं से कारोबार की क्रांति आ गई है। बैंबू रैट्स अब सिर्फ जंगलों या खेतों की समस्या नहीं रहे, वो अब प्लेट में परोसी जा रही एक नई कहानी हैं और उस कहानी में कमाई के हजारों अवसर छिपे हुए हैं।

■ धर्मेंद्र सिंह कर्ण

...जब हवा बनेगी ताकत की टंकी

ऑक्सीजन होगी दोगुनी तो दुनिया कैसी दिखेगी?

कल्पना कीजिए, आप सुबह उठते हैं और खुद को एक बेहद ताकतवर महसूस करते हैं ऊंचा कद, दमदार मांसपेशियां और ऊर्जा से भरपूर शरीर। आसपास की चींटियां अब कबूतर जितनी दिखती हैं, मकड़ियां चूहे के बराबर दौड़ रही हैं और गली के पेड़ इतने विशाल हो चुके हैं कि उनके पत्ते बादलों से अठखेलियां कर रहे हैं। यह कोई साइंस फिक्शन नहीं, बल्कि उस धरती की तस्वीर है, जहां ऑक्सीजन की मात्रा दोगुनी हो गई है।

वैज्ञानिक मानते हैं कि अगर पृथ्वी के वातावरण में ऑक्सीजन का स्तर आज के 21 प्रतिशत से बढ़कर 40-42 प्रतिशत तक पहुंच जाए, तो इससे जीवन का रूप-स्वरूप पूरी तरह बदल जाएगा। यह बदलाव जितना रोमांचक है, उतना ही खतरनाक भी। वैज्ञानिकों की मानें तो ऐसा परिवर्तन न केवल इंसान की ताकत बढ़ा देगा, बल्कि जीवन की पूरी संरचना को ही बदल सकता है। लेकिन इस ताकत के साथ खतरे भी कम नहीं हैं...

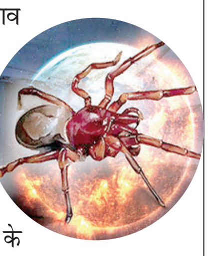

▪ इंसान बनेंगे 'सुपरह्यूमन'

जब कोशिकाओं में ज्यादा ऑक्सीजन पहुंचेगी, तो ब्लड सर्कुलेशन बढ़ेगा, मांसपेशियां ताकतवर होंगी। वैज्ञानिक इस स्थिति में इंसान की ताकत और लंबाई दोनों में इजाफा होने की बात कहते हैं। आप मार्वल कॉमिक्स के सुपर हीरो की तरह ताकतवर न सही, पर लंबे और ज्यादा फुर्तीले जरूर हो सकते हैं।

जानें कीटों, पेड़ों का राज

300 मिलियन साल पहले धरती पर जब ऑक्सीजन का स्तर ज्यादा था, तब कीड़े-मकोड़े काफी बड़े आकार के होते थे। इसी इतिहास को आधार बनाकर वैज्ञानिक कहते हैं कि आज अगर ऑक्सीजन दोगुनी हो गई तो वही दोहराया जाएगा। मच्छर अब छोटे पक्षी लगेंगे और मकड़ी शायद आपके जूते जितनी हो। पेड़ भी तेजी से बढ़ेंगे और उनके आकार में अकल्पनीय वृद्धि होगी।

खतरे भी कम नहीं

ज्यादा ऑक्सीजन से जंगल में आग तेजी से फैलेगी। यही नहीं, शरीर में अत्यधिक ऑक्सीजन से ऑक्सीजन टॉक्सिसिटी जैसी स्थिति बन सकती है, जिससे कोशिकाओं में ऑक्सिडेशन तेज होगा जो जान भी ले सकता है।

भविष्य की चेतावनी

जहां हम ऑक्सीजन बढ़ने की कल्पना से रोमांचित हैं, वहीं वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले 1 अरब वर्षों में धरती से ऑक्सीजन खत्म हो सकती है। शोध के मुताबिक, जैसे-जैसे सूरज और गर्म होगा, पृथ्वी पर पौधों की संख्या घटेगी और ऑक्सीजन बनना बंद हो जाएगा। नतीजा, धरती फिर उस स्थिति में लौट जाएगी, जब जीवन संभव नहीं था।

संतुलन ही जीवन

ऑक्सीजन न तो कम अच्छी है और न ही ज्यादा। जीवन के लिए इसका संतुलन जरूरी है। यह गैस जितनी अनिवार्य है, उतनी ही संवेदनशील भी है। पृथ्वी की जलवायु, जैविक संरचना और जीवन की गति इसी अदृश्य, लेकिन एक ताकतवर तत्व से संचालित होती है।

मौन संकट... मधुमक्खियों की घटती आबादी और खाद्य सुरक्षा पर मंडराता खतरा

मधुमक्खियां केवल शहद नहीं बनातीं, वे हमारे खेतों को जीवन देती हैं। उनका संरक्षण करना केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के भोजन और भविष्य की रक्षा करना है। अब समय आ गया है कि हम उन्हें बचाने के लिए ठोस कदम उठाएं।

भारत के खेत-खलिहान और फल-फूलों से महकते बाग-बगीचे इस समय एक गहरे लेकिन अनदेखे संकट की चपेट में आ रहे हैं। देश भर में मधुमक्खियों की आबादी में लगातार गिरावट देखी जा रही है। यह एक ऐसा संकट है जो यदि समय रहते नहीं रोका गया तो खाद्य उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। विशेषज्ञ इसे मौन त्रासदी की संज्ञा दे रहे हैं, जो धीमे-धीमे हमारी कृषि व्यवस्था की नींव को कमजोर कर रही है।

परागणकर्ता मधुमक्खियां कृषि की अदृश्य नायिका

गौरतलब है कि लगभग 80 प्रतिशत फसलों और अधिकांश फलदार वृक्षों की उत्पादकता परागण पर निर्भर करती है और इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मधुमक्खियां निभाती हैं। शोध बताते हैं कि लगभग 75 प्रतिशत परागण कार्य अकेले मधुमक्खियां ही करती हैं। इन्हें कृषि उत्पादन की रीढ़ की हड्डी कहा जा सकता है। इनका अस्तित्व केवल शहद तक सीमित नहीं, बल्कि यह हमारे भोजन की थाली तक की गारंटी देती हैं।

संकट के मूल कारण

विशेषज्ञों का मानना है कि मधुमक्खियों की घटती संख्या के पीछे कई परतें हैं, जिनमें सबसे बड़ी है कीटनाशकों का अत्यधिक और असावधान उपयोग। खेतों में उपयोग होने वाले कीटनाशक, खरपतवारनाशी और रासायनिक उत्पाद मधुमक्खियों के लिए विष समान बनते जा रहे हैं। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन से बढ़ता तापमान, गर्मी का तनाव और मोबाइल टावरों से निकलने वाला विकिरण भी मधुमक्खियों के अस्तित्व को संकट में डाल रहे हैं। ये सभी कारक मिलकर परागणकर्ता प्रजातियों को शारीरिक और जैविक रूप से थका रहे हैं।

उप-घातक प्रभाव

धीमा, लेकिन घातक जहर

मधुमक्खियों की बड़े पैमाने पर होने वाली मौतें तो चिंताजनक हैं ही, परंतु अधिक खतरनाक है कीटनाशकों की उप-घातक खुराक, जिनसे मधुमक्खियां तुरंत नहीं मरतीं, बल्कि धीरे-धीरे अपना व्यवहार बदलने लगती हैं। वे गंध पहचानने की क्षमता खो देती हैं, दिशा भ्रम का शिकार हो जाती हैं और भोजन की तलाश या छत्ते तक लौटने में असमर्थ हो जाती हैं। इन बदलावों के कारण पूरे छत्ते का अस्तित्व खतरे में आ जाता है।

भ्रमित करने वाले सुरक्षित कीटनाशक

जब भारत में नियोनिकोटिनॉयड जैसे कीटनाशक लाए गए, तो उन्हें अपेक्षाकृत सुरक्षित माना गया था। लेकिन अब शोध स्पष्ट कर चुके हैं कि ये भी मधुमक्खियों के लिए उतने ही हानिकारक हैं जितने पारंपरिक रसायन। यहां तक कि तथाकथित जैविक कीटनाशक भी मधुमक्खियों को धीमा जहर दे रहे हैं।

समय रहते चेतावनी का महत्व

देशभर में अभी तक मधुमक्खियों की आबादी पर कोई समग्र और व्यवस्थित अध्ययन नहीं हुआ है, जिससे वास्तविक स्थिति का अंदाजा लगाना कठिन हो गया है। लेकिन जमीनी अनुभव और स्थानीय रिपोर्टें इस संकट की गंभीरता की ओर इशारा कर रही हैं। कृषि वैज्ञानिक, कीट विज्ञानी और मधुमक्खी पालन विशेषज्ञ अब एक स्वर में कह रहे हैं कि यह समय ठोस कार्रवाई का है। यदि हमने इस मौन संकट की अनदेखी की, तो आने वाले वर्षों में भारत की खाद्य सुरक्षा एक गंभीर खतरे में पड़ सकती है।

■ जसवंत सिंह राजपूत

फंगस: खेतों की दुश्मन या जिंदगी की साथी?

कैंसर जैसी घातक बीमारी के इलाज में नई उम्मीद

सोचिए, जिस फंगस ने वर्षों तक किसानों की नींद उड़ा दी, जो अनाज में जहर घोल देती थी, अब वही फंगस कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी के इलाज की उम्मीद बन गई है। यह कोई साइंस फिक्शन नहीं, बल्कि विज्ञान की एक सच्ची और चमत्कारिक कहानी है एस्परगिलस फ्लेवस नाम की फंगस की, जो जहर से जीवन का सफर तय कर चुकी है।

फंगस वह सूक्ष्म जीव है, जो नमी और अंधेरे वाले वातावरण में तेजी से पनपता है। ये न तो पूरी तरह पौधे हैं, न ही जानवर। ये एक अलग ही जीव जगत के सदस्य होते हैं। रोटी पर उगता काला या हरा फफूंदी हो या मशरूम जैसा खाद्य स्रोत, ये सब फंगस ही हैं। इनमें से कुछ फंगस फसलों को बर्बाद करते हैं तो कुछ दवाओं का आधार भी बनते हैं। फंगस से ही दुनिया को पहली एंटीबायोटिक दवा पेनिसिलिन मिली थी, जिसने लाखों लोगों की जान बचाई। एस्परगिलस फ्लेवस नामक फंगस खासतौर पर अनाज, मूंगफली और मकई जैसी फसलों में पाई जाती है। यह अफ्लाटॉक्सिन नामक एक विषैला तत्व बनाती है, जो लिवर कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है। भारत, अफ्रीका और दक्षिण एशिया के कई देशों में यह एक बड़ा कृषि संकट रहा है।

वैज्ञानिकों ने जहरीले फंगस से निकाला खास यौगिक

अमेरिका में वैज्ञानिकों ने जहरीली फंगस से एक ऐसा यौगिक निकाला है, जो कैंसर कोशिकाओं के डीएनए को बिगाड़कर उन्हें खत्म करता है, पर स्वस्थ कोशिकाओं को छूता तक नहीं। हालांकि यह दवा प्री-क्लिनिकल ट्रायल में है, लेकिन अब तक के नतीजे बेहद आशाजनक हैं। कीमोथेरेपी और रेडिएशन से स्वस्थ कोशिकाएं भी प्रभावित होती हैं। नई दवा कैंसर को टारगेट कर मारती है, स्मार्ट टारगेटिंग तकनीक से।

बदल सकती है स्थिति

अगर क्लीनिकल ट्रायल सफल होते हैं, तो अगले 3-5 वर्षों में यह दवा कैंसर के इलाज में बड़ा बदलाव ला सकती है। पर ध्यान रहे, फंगस से बनी हर चीज लाभकारी नहीं होती, अनियंत्रित मात्रा में सेवन या संपर्क से यह खतरनाक भी हो सकता है। इसलिए शोध और संतुलित प्रयोग ही इसका सही रास्ता है। फंगस हमें यह सिखाता है कि प्रकृति में कोई भी चीज एकतरफा नहीं होती। जहर भी दवा बन सकता है अगर उसे समझा जाए, उसका सही इस्तेमाल किया जाए।

जानें इन फंगस के फायदे और नुकसान

फंगस का नाम	नुकसान	उपयोग/फायदा
एस्परगिलस फ्लेवस	अफ्लाटॉक्सिन से लिवर डैमेज	कैंसर की दवा की खोज में उपयोग
कैंडिडा	स्किन और ओरल इंफेक्शन	कुछ मामलों में एंजाइम्स के लिए स्रोत
पेनिसिलियम	खाने को खराब करता है	पेनिसिलिन एंटीबायोटिक का स्रोत
मशरूम (फूड ग्रेड)	खराब होने पर विषैला हो सकता है	प्रोटीन, विटामिन बी व औषधीय उपयोग

आरएनआई नं. DELHIN/2009/28518 स्वामी, संपादक, मुद्रक, प्रकाशक रमाकांत पाण्डेय द्वारा दिव्य भारत प्रकाशन के लिए एन-93 डी नारायण नगर लक्ष्मी नगर, दिल्ली से प्रकशित एवं बीएफएल इन्फोटेक लि., प्रेस सी-9 सेक्टर 3 नोयडा से मुद्रित. संपादक : रमाकांत पाण्डेय, कार्यकारी संपादक : आलोक पाण्डेय*, फोन 7701825882, 7905152597, *पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन एवं प्रकाशन के लिए उत्तरदाई.E-mail : newsdibyabharat@gmail.com